THE

SUBHA BILAS,

A

COLLECTION OF STANZAS

ON VARIOUS SUBJECTS,

IN

HINDEE,

BY DIFFERENT AUTHORS.

EDITED BY

Captain W. Price,

Professor of Hindee and Hindoostanee in the College of Fort William.

PRINTED AT THE EDUCATION PRESS.

1828.

College of Fort William

सभा बिलास

संग्रह

नाना विषय के दोहा आदि भिन्न भिन्न कवियों के

हिंदी भाषा में

फोर्त उलियम के कालिज के हिंदी औ हिंदूस्तानी

अध्यापक

कपतान उलियम प्राइस साहिब ने

छपवाया

संस्कृत पाठशाला के छापेखाने में

कलकत्ता १८२८ ईसवी

॥ अथ सभा बिलास कौ सूची पत्र ॥

॥ सभा विलास ॥

॥ सोरठा ॥

विघनहरण गणराय मूषकबाहन गजबदन ।
गणपतिचरण मनाय तबै काज कछु कीजिये ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

आन न भावत स्वाद द्रुम पच्यौ गह्यौ सुमलिन्द ।
कृष्णचरणअरविन्द कौ पियत सदा मकरन्द ॥ २ ॥
ममता भ्रमता के मिटे उपजे समता ज्ञान ।
रमें जु रमता राम सों जम ता गहै न मान ॥ ३ ॥
साध सक्यौ न तू साधसङ्ग लाय न सक्यौ समाध ।
बिषे बिषाद उपाधि तज हरि पल आध अराध ॥ ४ ॥
निगम अरु गीता ने कह्यौ पर्मपुनीता नाम ।
बीत्यौ जन्म जु जात है भज ले सीता राम ॥ ५ ॥
मन की मिटै मलीनता होय लीनता साथ ।
नीकी यहै प्रवीनता भजिये दीनानाथ ॥ ६ ॥

क

जिन पायौ हरि रस मरम मिटै भरम भ्रम दोय।
गह्यौ धर्म्म अपकर्म्म तज मान परमगति होय ॥ ७ ॥
सुख कारण तारण तरण बारण लयौ उबार।
कंस पछारन मान हरि निरधारण आधार ॥ ८ ॥
काम क्रोध लागी सुरत वहै अभागी जान।
हरि अनुरागी जासु मति सो बड़ भागी मान ॥ ९ ॥
सुखदायक भायक भगत उपजायक आनन्द।
तीनलोकनायक जपौ अघघायक ब्रजचन्द ॥ १० ॥
पौरी पद निर्वान की यहै ज्ञान की गाथ।
आज्ञा वेद पुरान की जपौ जानकीनाथ ॥ ११ ॥
जपें गणेश सुरेश से औ महेश मुख आप।
आनन्द देश विदेश में हृषीकेश के जाप ॥ १२ ॥
घने बाज गजराज हैं सुख के सने समाज।
बने ठने किहिं काज हैं जो न हेत ब्रजराज ॥ १३ ॥
उपजावन आनन्द उर पतित सुपावन राम।
आवन जावन जात मिट जप बावन कौ नाम ॥ १४ ॥
जौलौं घट में सांस है होय रहो हरिदास।
पूरै आस निरास की वासुदेव उर बास ॥ १५ ॥
मान मुण्डमाली कह्यौ नरककुण्ड नहि जाय।
कोटि झुण्ड पापी तरे पुण्डरीक गुण गाय ॥ १६ ॥

॥ अथ दृष्टान्त ॥

भाव सरस समझत सबै भले लगें दृह भाय।
जैसे औसर की कही बानी सुनत सुहाय ॥ १७ ॥
नीकी यै फीकी लगे बिन औसर की बात।
जैसें बरनत युद्ध में रससिंगार न सुहात ॥ १८ ॥
फीकी यै नीकी लगे कहियै समें बिचार।
सब के मन हर्षित करै जैां विवाह में गार ॥ १९ ॥
जाही तें कछु पाइयै करियै ताकी आस।
रीते सरवर पै गये कैसें बुझत पियास ॥ २० ॥
स्वातिबूंद है सघन में चातक मरत पियास।
जो जाहीको कै रहै सो तिहिं पूरे आस ॥ २१ ॥
भले बुरे सब एक से जैालैां बोलत नांहि।
जान परत हैं काक पिक ऋतु बसंत के मांहि ॥ २२ ॥
मधुर बचन तें जात मिट उत्तम जन अभिमान।
तनक सीत जल सों मिटै जैसें दूध उफान ॥ २३ ॥
सबै सहायक सबल के कोउ न निबल सहाय।
पवन जगावत आग कैां दीपहि देत बुझाय ॥ २४ ॥
कछु बसाय नहिं सबल सों करै निबल सों जोर।
चलै न अचल उखार तरु डारत पवन झकोर ॥ २५ ॥
जो जाही सों रच रह्यो तिहिं ताही सों काम।
जैसे किरवा आक कैा कहा करै बस आम ॥ २६ ॥

प्रकृति मिलै मन मिलत है अनमिल तें न मिलाय।
दूध दही तें जमत है कांजी तें फट जाय ॥ २७ ॥
परघर कबहुं न जाइये गए घटत है जोति।
रविमंडल में जात ससि छीन कला छबि होति ॥ २८ ॥
ब्रह्म बनाए बन रहे ते फिर और बनै न।
कान कहत नहि बैन औ जीभ सुनत नहि बैन ॥ २९ ॥
मूरख गुण समुझे नहीं तो न गुणी में चूक।
कहा भयो दिन को विभौ देखो जो न उलूक ॥ ३० ॥
मूढ तहां ही मानिये जहां न पंडित होय।
दीपक को रवि के उदै बात न बूझे कोय ॥ ३१ ॥
निकट अबुद्ध समझै कहा बुद्धजन बचन बिलास।
कबहूं भेक न जानहीं अमल कमल की बास ॥ ३२ ॥
सांच झूठ निरनय करै नीतिनिपुन जो होय।
राजहंस बिन को करै छीर नीर कों दोय ॥ ३३ ॥
दोख हि कों उमहै गहै गुण न गहै खललोक।
पिय रुधिर पय ना पियै लगी पयोधर जोक ॥ ३४ ॥
कारज धीरै होतु है काहे होत अधीर।
समै पाय तरवर फरै केतक सींचो नीर ॥ ३५ ॥
क्यों कीजे ऐसो जतन जातें काज न होय।
परबत पै खोदै कुआ कसे निकसे तोय ॥ ३६ ॥

जो चाहैं सोई करैं बड़े असंकित अंग।
सब के देखत नगन हर धरत गोर अर्द्धंग ॥ ३७ ॥
बड़े सहज ही बात सों रीझ देत बकसीस।
तुलसीदल तें विष्णु ज्यों आक धतूरे ईस ॥ ३८ ॥
सुधरी बिगरै बेग ही बिगरी फिर सुधरै न।
दूध फटै कांजी परे सो फिर दूध बनै न ॥ ३९ ॥
छोटे नर तें रहत हैं सोभायुत सिरताज।
निर्म्मल राखै चांदनी जैसे पायंदाज ॥ ४० ॥
सहज रसीलो होय सो करै अहित पर हेत।
जैसें पीड़ित कीजिये ईख तऊ रस देत ॥ ४१ ॥
कबहूं कुसंग न कीजिये किये प्रकृति की हानि।
गूंगे कौ समझायबौ गूंगे की गति आनि ॥ ४२ ॥
कहा करै कोऊ जतन प्रकृति और की और।
बिष मारै ज्यावै सुधा उपजै एकहि ठौर ॥ ४३ ॥
डरै न काहू दुष्ट सों जाहि प्रेम की बान।
भौंर न छांडै केतकी तीखे कंटक जान ॥ ४४ ॥
धन बाढे मन बढगयौ नाहिन मन घट होय।
जो जल संग बढै जलज जलघट घटै न सोय ॥ ४५ ॥
सब तें लघु है मांगबौ यामें फेर न सार।
बलि पे जाचत ही भए बावन तन करतार ॥ ४६ ॥

सब इकसे होत न कहूं होत सबन में फेर।
कपरौ खादी बाफतौ लोह तवा समसेर ॥ ४७ ॥
जैसे की सेवा करै तैसी आसा पूर।
रत्नाकर सेवे रतन खर सेवे मालूर ॥ ४८ ॥
होत सुसंगति सहज सुख दुख कुसंग के थान।
गंधी और लुहार की बैठो देख दुकान ॥ ४९ ॥
ठौर छुटे तें मीत ह्वै अमीत सतरात।
रवि जल उखरे कमल कौं जारत गारत जात ॥ ५० ॥
जात गुनी जातन तहां आडंबरजुत सोय।
पहुंचे चंग अकास लौं जो गुन संयुत होय ॥ ५१ ॥
गुनवारौ संपत लहै लहै न गुन बिन कोय।
काढ़े नीर पताल तें जो गुनयुत घट होय ॥ ५२ ।
अरि छोटौ गनिये नहीं जातें होत बिगार।
तृन समूह कौं छिनक में जारत तनक अंगार ॥ ५३ ॥
पंडितजन कौ स्रम मरम जानत जे मतिधीर।
कबहूं बांझ न जानही तन प्रसूत की पीर ॥ ५४ ॥
बीर पराक्रम ना करै तासौं डरत न कोय।
बालक हू के चित्त कौ बाघ खिलौना होय ॥ ५५ ॥
नृपप्रताप तें देस में रहै दुष्ट नहिं कोय।
प्रगटै तेज दिनेस कौ तहां तिमिर नहिं होय ॥ ५६ ॥

कारज ताही को सरै करै जो समय निहार।
कबहु न हारै खेल जो खेलै दाव विचार ॥ ५७ ॥
कोऊ दूर न कर सकै उलटे विधि के अंक।
उदधि पिता तऊ चंद को धोय न सक्यो कलंक ॥ ५८ ॥
गाहक सबै सपूत के सारै काज सपूत।
सब कौ ढंपन होतु है जैसें सन को सूत ॥ ५९ ॥
करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात तें सिल पर परत निसान ॥ ६० ॥
को सुख को दुख देत है देत कर्म्म झकझोर।
उरझे सुरझे आपही ध्वजा पवन के जोर ॥ ६१ ॥
भली करत लागे बिलंब बिलंब न बुरे बिचार।
भवन बनावत दिन लगैं ढाहत लागै न बार ॥ ६२ ॥
सांई अपनो आपनो रहै निरंतर साथ।
होत परायो आपनो प्रस्त पराए हाथ ॥ ६३ ॥
कहा रस में कहा रोस में अरि सों जिन पतियाय।
जैसें सीतल तप्त जल डारत अग्नि बुझाय ॥ ६४ ॥
अंतर अंगुरी चार को सांच झूठ में होय।
सब माने देखी कही सुनी न माने कोय ॥ ६५ ॥
होय भले के सुत बुरो भलो बुरे के होय।
दीपक सों काजल प्रगट कमल कीच सों होय ॥ ६६ ॥

होय भले चाकरन तें भलौ धनी कौ काम ।
ज्यौं अंगद हनुमान तें सीता पाई राम ॥ ६७ ॥
सुख सज्जन के मिलन कौ दुर्जन मिले जनाय ।
जानै ऊख मिठास कौं जब मुख नीम चबाय ॥ ६८ ॥
जाहि मिले सुख होतु है तिहिं बिछुरे दुख होय ।
सूर उदै फूले कमल ता बिन सकुचै सोय ॥ ६९ ॥
झूंठ हू करिये जतन कारज बिगरे नांहिं ।
कपटपुरुष धन खेत पर देखत मृग फिर जांहिं ॥ ७० ॥
कारज सोई सुधरिहै जो करिये सम भाय ।
अति बरसे बरसे बिना ज्यौं करिसन कुम्हिलाय ॥ ७१ ॥
रहै प्रजा धन यत्न सों तहां बांकी तरवार ।
सो फल कोऊ न ले सकै जहां कटीली डार ॥ ७२ ॥
पंडित औ वनिता लता शोभित आश्रय पाय ।
है मानिक बहु मोल कौ हेमजटित छबि छाय ॥ ७३ ॥
अपनी प्रभुता कौं सबै बोलत झूठ बनाय ।
बेश्या बरष घटावही जोगी बरष बढ़ाय ॥ ७४ ॥
कहूं कहूं गुन दोष तें उपजत दुःख शरीर ।
मधुरी बानी बोलके परत पींजरा कीर ॥ ७५ ॥
भले बुरे निबहैं सबै महतपुरुष के संग ।
चन्द सर्प जल अग्नि ये बसत शंभु के अंग ॥ ७६ ॥

बिना कहे हू सतपुरुष पर की पूरें आस ।
कौन कहत है सूर कौं घर घर करत प्रकास ॥ ७७ ॥
कछु कहि नीचन छेड़िये भलो न वाको संग ।
पाथर डारे कीच में उछरि बिगारे अंग ॥ ७८ ॥
मीठी मीठी वस्तु नहि मीठी जाकी चाह ।
अमली मिछरी छाड़िके आफू खात सराह ॥ ७९ ॥
खाय न खरचै सूम धन चोर सबल लेजाय ।
पीछे ज्यों मधुमछिका हाथ मले पछताय ॥ ८० ॥
उत्तम विद्या लीजिये जदपि नीच पै होय ।
पर्यो अपावन ठौर में कंचन तजत न कोय ॥ ८१ ॥
जान बूझ अजुगत करै तासों कहा बसाय ।
जागत ही सोवत रहै ताकों कहा जगाय ॥ ८२ ॥
सजन बचावे कष्ट तें रहै निरंतर साथ ।
नैनसहाई ज्यों पलक देहसहाई हाथ ॥ ८३ ॥
अरि के कर में दीजिये अवसर को अधिकार ।
ज्यों ज्यों द्रव्य लुटायहै त्यों त्यों जस बिस्तार ॥ ८४ ॥
बुद्धिवान गंभीर कों संगत लागै नांहि ।
ज्यों चन्दन ढिग अहि रहत बिष न होय तिहिं मांहि ॥ ८५ ॥
सज्जन कौ दुख हू दिये दुरजन पूरें आस ।
जैसे चन्दन कौ घिसे सुंदर देत सुबास ॥ ८६ ॥

सज्जन चित कबऊ न धरत दुरजनजन के बोल।
पाहन मारें आम कों तउ फल देत अमोल ॥ ८७ ॥
बिरले नर पंडित गुनी बिरले बूझनहार।
दुखखंडन बिरले पुरुष ते उत्तम संसार ॥ ८८ ॥
जे करतार बड़े किये मग पग धरहि बिचार।
दुरजन हू सों मिल चलें बोलें रोस निवार ॥ ८९ ॥
जाहि बड़ाई चाहिये तजै न उत्तम साथ।
जों पलास संग पान के पऊंचे राजा हाथ ॥ ९० ॥
बचनपारखी होऊ तू पहले आपन भाख।
अनपूछे मती भाखिये यही सीख जिय राख ॥ ९१ ॥
मुख श्रवन दृग नासिका सबही के इक ठौर।
कहबौ सुनबौ देखबौ चतुरन कौ कछु और ॥ ९२ ॥
इक कामिन अरु कबिबचन दोऊ रस की ठौर।
बेधक कौ मन बेधई वे कामिन कबि और ॥ ९३ ॥
जो तू चाहै अधिक रस सीख ईख की लेय।
जो तोसों अनरस करै ताहि अधिक रस देय ॥ ९४ ॥
नर की अरु नलनीर की गति एकै करि जोय।
ज्यों ज्यों नीचो ह्वै चलै त्यों त्यों ऊंचो होय ॥ ९५ ॥

॥ अथ पखाने ॥

कैसें निबहै निबलजन करि सबलन सों गैर।
जैसें बस सागर बिषै करत मगर सों बैर ॥ ९६ ॥

अपनी पहुंच विचारकै करतब करिये दौर।
तेते पांव पसारिये जेती लांबी सौर ॥ ९७ ॥
पिशुनछल्यौ नर सुजन सौं करत विश्वास न चूकि।
जैसें दाध्यौ दूध कौ पीवत छाछहि फूंकि ॥ ९८ ॥
फेर न ह्वैहै कपट सौं जो कीजै व्यौपार।
जैसें हांडी काठ की चढ़ै न दूजी बार ॥ ९९ ॥
करिये सुख कौं होत दुख यह कहौ कौन सयान।
वा सोने कौं जारिये जासौं टूटै कान ॥ १०० ॥
भले बुरे जहां एक से तहां न बसिये जाय।
ज्यौं अन्यायपुर में बिकै खर गुर एकै भाय ॥ १०१ ॥
भाव भाव की सिद्धि है भाव भाव में भेव।
जो माने तो देव है नहीं भींत कौ लेव ॥ १०२ ॥
अति अनीति लहिये न धन जो प्यारौ मन होय।
पाए सोने की छुरी पेट न मारै कोय ॥ १०३ ॥
मूरख कौं पोथी दई बांचन कौं गुन गाथ।
जैसें निरमल आरसी दई अंध के हाथ ॥ १०४ ॥
अति हठ मत कर हठ बढ़ै बात न करिहै कोय।
ज्यौं ज्यौं भीजै कामरी त्यौं त्यौं भारी होय ॥ १०५ ॥
लालच हू ऐसौ भलौ जासौं पूजै आस।
चाटे हू कहूं ओस के बुझत काहू की प्यास ॥ १०६ ॥

जैसौ गुन दीनौ दई तैसौ रूप निबंध।
ये दोऊ कहां पाइये सोनौ और सुगंध ॥ १०७ ॥
प्रेम निवाहन कठिन है समझ कीजियो कोय।
भांग भखन है सुगम पै लहर कठिन ही होय ॥ १०८ ॥
एक वस्तु गुन होत है भिन्न प्रकृति के भाय।
भटा एक कौं पित करै करत एक कौं बाय ॥ १०९ ॥
बिन स्वारथ कैसें सहै कोऊ करुए बैन।
लात खाय पुचकारिये जु होय-दुधारू धैन ॥ ११० ॥
करै बुराई सुख चहै कैसें पावै कोय।
रोपै पेड़ बबूल कौ आंम कहां तें होय ॥ १११ ॥
होय बुराई तें बुरौ यह कीनौ निरधार।
खाड़ खनेगौ और कौं ताकौं कूप तैयार ॥ ११२ ॥
एक भेख के आसरै जाति बरण छिप जात।
ज्यौं हाथी के पांव में सब कौ पांव समात ॥ ११३ ॥
कन कन जोरै मन जुरै खातें निबरै सोय।
बूंद बूंद सौं घट भरै टपकत बीतै तोय ॥ ११४ ॥
श्रम ही सौं सब मिलत है बिन श्रम मिलै न काहि।
सीधी अंगुरी घी जम्यौ क्याहूं निकरै नाहि ॥ ११५ ॥
होत न कारज मो बिना यहै कहै सो अयान।
जहां न कुर्कट शब्द तहां होत न कहा बिहान ॥ ११६ ॥

यही बात सबही कहैं राजा करै सो न्याव।
ज्यों चौपर के खेल में पासौ परै सो दाव ॥ ११७ ॥
पर कौ अवगुन देखियै अपनौ दृष्ट न होय।
करै उजेरौ दीप पै तरै अंधेरौ जोय ॥ ११८ ॥
अपनी अपनी ठौर पर सब कौ लागै दाव।
जल में गाड़ी नाव पर थल गाड़ी पर नाव ॥ ११९ ॥
सुख दिखाय दुख दीजियै खल सों लरियै काहि।
जौ गुर दीनें ही मरत क्यौं बिष दीजै ताहि ॥ १२० ॥
अनपूछे ही जानियै मूढ़ देख मन मांहि।
छलकै ओछे नीर घट पूरे छलकै नांहि ॥ १२१ ॥
बिनसत बार न लागही ओछे जन की प्रीति।
अंबर डंबर सांझ के ओ बालू की भीति ॥ १२२ ॥
कुल सपूत जान्यौ परैं लखि सब लच्छन गात।
होनहार बिरवान के होत चीकने पात ॥ १२३ ॥
जो धनवंत सु देय कछु देइ कहा धनहीन।
कहा निचोरै नग्न जन न्हान सरोवर कीन ॥ १२४ ॥
होत निबाह न आपनौ लीने फिरै समाज।
चूहा बिल न समात है पूंछ बांधियै छाज ॥ १२५ ॥
बिना प्रयोजन भूलिहू ठटियै नाहीं ठाट।
जानौ नहिं जा नगर कौं ताकी पूछ न बाट ॥ १२६ ॥

इंगित औ आकार तें जान लेत जो भेट।
तासें बात दुरै नहीं ज्यों दाई सों पेट ॥ १२७ ॥
आप कहै नाहिन करै ताकौ है यह हेत।
आप न जावै सासरै औरन कौं सिख देत ॥ १२८ ॥
जो करिये सो कीजिये पहले कर निरधार।
पानी पी घर पूछनौ नाहिन भलो बिचार ॥ १२९ ॥
पाछे कारज कीजिये पहलै यतन बिचार।
बड़े कहत हैं बांधिये पानी पहलै पार ॥ १३० ॥
ठीक किये बिन और की बात सांच मत थर्प।
होत अंधेरी रैन में परी जेवरी सर्प ॥ १३१ ॥
झूठ बिना फीकी लगै अधिक झूठ दुखभौन।
झूठ तितौ ही बोलिये ज्यों आटे में लौन ॥ १३२ ॥
ठौर देखकै लजिये कुटिल सरल गति आप।
बाहर टेढ़ौ फिरत है बांबी सूधौ सांप ॥ १३३ ॥
दोऊ चाहैं मिलन कौं तौ मिलाप निरधार।
कबहू नाहिन बाजिहैं एक हाथ तें तार ॥ १३४ ॥
आप अकारज आपनौ करत कुसंगत साथ।
पाय कुल्हारी देत है मूरख अपने हाथ ॥ १३५ ॥
ताही कौं करिये यतन रहिये जाकी आर।
कौन बैठकै डार पर काटै वोई डार ॥ १३६ ॥

परतछ नीकै देखिये कहा बरने कोऊ ताहि।
करकंकन कों आरसी को देखत है चाहि ॥ १३७ ॥
आए आदर ना करै जात रहै पछताय।
घर आयौ नाग न पूजिये बांबी पूजन जाय ॥ १३८ ॥
निबल सबल के पच्छ तें सबलन सों अनखात।
देत हिमायत को गधो एराकी कै लात ॥ १३९ ॥
बहुत द्रव्य संचय जहां चोर राजभय होय।
कांसे ऊपर बीजरी परत कहत सब कोय ॥ १४० ॥
ओछे नर के पेट में रहै न मोटी बात।
आद सेर के पात्र में कैसें सेर समात ॥ १४१ ॥
तरसे हू परसे नहीं सौढ़ा रहत उदास।
जो सर सूखा भादवें किसी उन्हाले आस ॥ १४२ ॥
हिलन मिलन चितवन मिटी वय बीते करतूत।
जोगी था सो उठगया आसन रही भभूत ॥ १४३ ॥
मिलन चले आये बहुरि तउ न रही तियचित्त।
कांधे डाली कामली योगी काके मित्त ॥ १४४ ॥
तजिकै सुन्दर चतुर पिय बिरमे अनत बसाय।
कूकर चौक चढ़ाइये चाकी चाटन जाय ॥ १४५ ॥
निरखि प्रात पिय सौति सब रही प्रीति हित हार।
लेय परोसन सोंपरी नित उठि करती रार ॥ १४६ ॥

बय रति गति मति चाह बिन पिया रिझवन की बाक।
धोबी बेटा चांद सा सीटी और पटाक ॥ १४७ ॥
रूठ्यौ पिय सौतिनि मिल्यौ सखि हिं खिजत कर मान।
सा बस चलत कुम्हार सों खर के मेंठति कान ॥ १४८ ॥
पिय बुलवन पठई सखी रही बैठि सुख लेय।
चोरी कुतिया मिल गई पहरी कासो देय ॥ १४९ ॥
सब सुख दै पिय हित करै तउ न रहै तिय नीति।
भुस ऊपर कौ लीपनौ अरु बालू की भीति ॥ १५० ॥
पिय औरै चितवन चलन घर तिय सों नहिं लेस।
जैसे कंता घर रहे तैसे गये बिदेस ॥ १५१ ॥
बय बीते आये रवन अब न लहत चित चाय।
बीत्यौ व्याह कुम्हार कौ भांडा लै लै जाय ॥ १५२ ॥
पीव परोसिन तें रहत तिय न कहत डर काज।
अपनी जांघ उघारिये आपहि मरिये लाज ॥ १५३ ॥
सौतिन कोउ बय सें गनी पिय तें भयौ बियोग।
जिहिं घर जितौ बधावनौ तिहि घर तितनौ सोग ॥ १५४ ॥
तिय बैठी मन सकुचके पिय आये नहिं चाय।
सूने घर कौ पाऊनौ ज्यों आवे त्यों जाय ॥ १५५ ॥
सुख बिलसे जोबन समें फिर पछतावत बाल।
गई बास सोदार की रही खाल की खाल ॥ १५६ ॥

सौति लरी पिय पै गई बचे रहौ रिस पाग।
घर की दाधी बन गई बन में लागी आग ॥ १५७ ॥

पाय पलोटत है तिया है तिय सोवत साथ।
इक है है अरु चीकनी पुनि लाडू दोउ हाथ ॥ १५८ ॥

पिय आये जोबन बिते बऊरौं चले बिदेस।
दोनौं खोई जोगना मुद्रा औ आदेस ॥ १५९ ॥

अद्भुत हित प्रीतम प्रिया सौति न जानत सार।
काजर सब कोउ देत है चितवन मांहि बिचार ॥ १६० ॥

नौढ़ा प्रौढ़ा सों कहत हौं जानत रसघात।
कूआ में की मेंडुकी कहै समुद्र की बात ॥ १६१ ॥

सौति आज टोंना कियो हौं न कहौंगी सोय।
महतौ दुसौ पयार में को कहि बैरी होय ॥ १६२ ॥

सौति बात मीठी कहत तऊ सौति सतराय।
सो गाहा सूओ पढ़ै अंत बिलाई खाय ॥ १६३ ॥

अली लई संग टहल को करन लगी रसरास।
गाडर आनी ऊन कों बैठी चरै कपास ॥ १६४ ॥

सौति प्रीति जोरत रहै दुलहन देत उठाय।
आंधी बांटै जेवरी पाछै बकरी खाय ॥ १६५ ॥

जोबन लौं तिय रस रमी बीते भयो बियोग।
कोल्हू सों खल उतरी भई पलीता जोग ॥ १६६ ॥

मान मनाये बिन कहत आव खेल हंस बोल।
बनिक हाट बैठन न दे कह झुकतौ सो तोल॥ १६७॥
नौढ़ा सों अति रति करी सो न कहत रतिचाव।
भीजा में के घाव कौं या जानै के राव॥ १६८॥
अधिक मान तें तिय तजी पिय न मिले हित जोड़।
बनजारे की आग जौं गयौ बलंती छोड़॥ १६९॥
सुघ नायक सुघ तिय रमें असुघ न हिये समाय।
के हंसा मोती चुगै के लंघन रह जाय॥ १७०॥
कबऊ न रसकै कुच गहे रिसकै गहे न केस।
जैसे कंता घर रहे तैसे भये बिदेस॥ १७१॥

॥ अथ प्रेम ॥

भूत लगे मदरा पिये सब काहू सुध होय।
प्रेमसुधारस जिन पियौ तिन न रहै सुध कोय॥ १७२॥
अद्भुत पैंडो प्रेम कौ न्याय कहत सब कोय।
नैननि सों नैना मिलें घाव करेजे होय॥ १७३॥
जे घट बिरह अवा अगन परपक भये सुभाय।
तिनहीं घट में मदभर प्रेम अमी ठहराय॥ १७४॥
जब बिछुरत तब होत दुख मिलकै हियो सिराय।
याही में रस दे भये प्रेम कह्यौ क्यौं जाय॥ १७५॥
जबलग मन के बीच कछु स्वारथ कौ रस होय।
प्रहू सुधा कैसें कहैं परे बीच में तोय॥ १७६॥

मनमतंग मद रस मत्यो धस्यो प्रेमरस आय।
लोक वेद कुलकाज की दई वेद बिचलाय॥ १७७॥
नीको बिरह समीप तें जा में मिलन की आस।
कहिये भलो संयोग क्यों जा में बिछुरन त्रास॥ १७८॥
प्रीति न टूटै अनमिले उत्तम मन की लाग।
सौ जुग पानी में रहै मिटै न चकमक आग॥ १७९॥

॥ अथ नेत्र ॥

अमी हलाहल मद भरे सेत स्याम रतनार।
जियत मरत झुक झुक परत जिहि चितवत इक बार॥ १८०॥
दौरत काहू और के थकै न कोऊ और।
मेरे दृग पै थकि रहैं देखत पियदृग दौर॥ १८१॥
प्यारी दृग अंजन दिये यह सुकंजन होय।
आय हिये मन लै गई देख सक्यो नहिं कोय॥ १८२॥
नैन सलौने अधर मधु कह रहीम घट कौन।
मीठो भावै लोन पर मीठे हू पर लौन॥ १८३॥
मन राखौं हौं बरजकै जिय राखौं समझाय।
नैना बरजे ना रहैं मिलैं अगाऊ जाय॥ १८४॥
अब बरजे तब ना रहे गये प्रेमरस लीन।
अपबस तें परबस भये ये बिसवासी नैन॥ १८५॥
पल न लगत है एक पल छिन न घटत घट बांस।
सालत मन जब तें चुभी नैन वैन की फांस॥ १८६॥

समझाये समझत नहीं सबक देत नहीं चैन ॥
नीर भरे पासे रहैं निपट अनोखे नैन ॥ १८७ ॥

पियमूरति चित लायके अब रोवैं ये नैन ।
बैरी आग लगायके दौरे पानी लैन ॥ १८८ ॥

प्यारे नैनन की कथन कैसें कहौं कवित्त ।
खिनक साह खिन चोरटा खिन बैरी खिन मित्त ॥ १८९ ॥

अनियारे तीखे कुटिल अंकुस से दृगबान ।
लागत सीधे आयके पाछैं खैंचैं प्रान ॥ १९० ॥

प्रीतम नैनन में गिरी जिन नैननि की सैन ।
फिर काढ़न कौं चाहिये वेई तीखे नैन ॥ १९१ ॥

लटपट पग धरतो धरै अटपट बोलत बैन ।
कछु पिय सों खटपट भई सु टपटप टपकत नैन ॥ १९२ ॥

पात झरंते इम कहैं सुन तरवर बनराय ।
अबके बिछुरे कब मिलें दूर परैंगे जाय ॥ १९३ ॥

आलम ऐसी प्रीति कर ज्यौं बारिज हित बार ।
वह सूखे वह ना रहै मिटै मूल इक बार ॥ १९४ ॥

प्रीति जो सीखो ईख सौं जहां गुरस की खान ।
जहां गांठ तहां रस नहीं यही प्रीति की बान ॥ १९५ ॥

बेलरियां कुलवंतियां नेहा ना चूकंत ।
जित्थे कंठ बिलग्गियां तित्थे ही सूकंत ॥ १९६ ॥

प्रीति जो ऐसी कीजिये ज्यौं निसि चंदा सेत।
ससि बिन निस है सांवरी निस बिन चंदा सेत ॥ १९७ ॥
बिपत बराबर सुख नहीं जो थोरे दिन होइ।
दुष्ट मित्र बंधू जिते जान परैं सब कोइ ॥ १९८ ॥
नेह निबाहन कठिन है फिरयौ जगत सब जोय।
बिमल प्रीति नहिं देखिये स्वारथ लग सब कोय ॥ १९९ ॥
प्रीति प्रीति सब कोउ कहै कठिन तासु की रीति।
आद अंत निबहै नहीं बालू की सी भीति ॥ २०० ॥
सहसर डुबकी मैं लई मुकुता कर हि न लाग।
सागर कौ कहा दोष है बुरे हमारे भाग ॥ २०१ ॥
नवला निकसी तीर जब नीर चुवत बरबीर।
मनौ अंसुवन रोवत बसन तन बिछुरन की पीर ॥ २०२ ॥
अलिकावलि में देखिये गोरे मुख की सोय।
ज्यौं रुखनि में चांदनी झिलमिल झिलमिल होय ॥ २०३ ॥
मुकुता तिय के कान में का गुन सदा कंपाय।
तिरछी चितवन तें डरै मत फिर बेध्यौ जाय ॥ २०४ ॥
रोमावलि हियरे सखी नाहिन एरी नांहि।
स्यामध्यान हिरदे बसे ताकी है परछांहि ॥ २०५ ॥
चुंबन समय जु नासिका बेसर मुतिय डुलाय।
अधर छुरावत पीय पै मानो बाधा खाय ॥ २०६ ॥

तिल चारा पानिप सलिल अलक फंद बलि चार।
मनपंछी गहि गहि किते डारे अवन पिटार॥ २०७॥
गुंजा ऐसे हो रहे मुकुता बेसर लाल।
नैन ओर के स्याम सब अधर ओर के लाल॥ २०८॥
जब तें मो ऊपर पड़ी स्याम सलोनी जोति।
लोनी लागै भौंत जौं देह दूबरी होति॥ २०९॥
गोरे मुख पर स्याम तिल ऐंच लियो जिय मोर।
नेही कैसें बूच रहे परे चांदनी चोर॥ २१०॥
फेंटा चले छिंडायकै निबल जान पिय मोहि।
मन की लगन छिंडायहौ तौ बलि बदिहौं तोहि॥ २११॥
गौन समें फेंटा गह्यो सुंदर हित जिय आन।
छूटत ही दोऊ छुटे उत फेंटा इत प्रान॥ २१२॥
गौन समय फेंटा गह्यो झांड जु कह्यो सुजान।
पीउ पियारे कहो तुम फेंटा तजूं कि प्रान॥ २१३॥
आज सखी हम इम सुन्यो पऊ फाटत पिय गौन।
पऊ अरु हियरे होड़ है पहले फाटे कौन॥ २१४॥
बाला प्रथमबियोगिनी घर ही घर पूछंत।
बलम पयाने ऐ सखी बलया क्यु बाढ़ंत॥ २१५॥
बिरह घटा कौंधा सुरत छिन छिन कौंधत आहि।
नैन नीर बरखा लगी गरजन आहि कराहि॥ २१६॥

सूनो भवन विदेश पिय उपजि शोक लिय लेति।
मूरति आवै ध्यान में उठ उठ आदर देति॥ २१७॥
आज देज बिदेश पिय ग्रशि निकस्यौ इहिं ओर।
मम नयना अरु पीय के आय भये इकठोर॥ २१८॥
उन बिन सब ऋतु फिर गई देख दिनन के फेर।
जेठ भिजोई आंसुवन सावन जारी घेर॥ २१९॥
प्रीतम तुम्हरे दरस कौं रह्यौ अधर जिय आय।
अब कहा आशा होति है रहै कि फिर घट जाय॥ २२०॥
मो मन मनसा द्रुम ऊतो जम्मन झांडौं पाय।
बिछुरन अंक जु विधि लिखे तासों कहा बसाय॥ २२१॥
मुख ग्रीषम पावस नयन जिय महियां जड़काल।
पिय बिन तन तें तीन ऋतु कबऊ न मिटति जमाल॥ २२२॥
जबलग हिय में धर सकी तबलग धरी जु धीर।
मीरन अब कैसी बनी जु अधिक पिरानी पीर॥ २२३॥
मन बहलावत दिन गयौ महा कठिन है रैन।
कहा करौं कैसें भरौं बिन देखे नहिं चैन॥ २२४॥
खिन बैठै खिन उठि चलै खिन खिन ठाढ़ी होय।
घायल सी घूंमति फिरै मरम न जानै कोय॥ २२५॥
साहस तन मन ज्ञान गुन सबै गये पिय संग।
चितवन दामिनि सी गिरी भस्म कियौ जिम अंग॥ २२६॥

बिरहीलोचन में रहत तिय बिन नीर गंभीर।
मीन रहत सब नीर में इन मीनन में नीर ॥ २२७ ॥
तेरे बिरहसमुद्र में हौं जहाज भई कंत।
तन मन जोबन डूबियो प्रेमध्वजा फहरंत ॥ २२८ ॥
रोम रोम बूंदैं चुवैं लोग प्रस्वेद कहंत।
सजनी सजन बियोग तें सब तन रुदन करंत ॥ २२९ ॥
पिय बिछुरत बिछुरे सबैं तन मन के सुख चैन।
घर बाहर न सुहात कछु तलफ कटै दिन रैन ॥ २३० ॥
संमन इक दिन वे हुते बिच न सुहाते हार।
बायु जो कोऊ फिर गई अब बिच परे पहार ॥ २३१ ॥
कालकूट तें कठिन है जो ब्यापै यह लाल।
जम नेरे आवै नहीं बिरह काल को काल ॥ २३२ ॥
तन दुख मन दुख नैन दुख हिये भये दुखखान।
मानो कबहूं ना हुती वा सुख सों पहचान ॥ २३३ ॥
रूप सयानप चातुरी सबै गई पिय साथ।
देखो सखी जु रह गई एक बौरई साथ ॥ २३४ ॥
हौं सजनी जानति नहीं पिय बिछुरन की सार।
जिय बिछुरन तें कठिन है पिय बिछुरन को बार ॥ २३५ ॥
हौं सजनी जानति नहीं बिछुरी भले भाय।
अब की बेर जो फिर मिलौं जन्म न छाडौं पाय ॥ २३६ ॥

अहमद गति अवतार की कहत सबै संसार।
बिछुरे मानष फिर मिलै धरै आन अवतार ॥ २३७ ॥

बिरहतपनि अति ही कठिन जानत हैं सब कोय।
देख सती या आग कौं जरिकै सीतल होय ॥ २३८ ॥

बिरहदही पनघट गई तपति न तज सिराय।
भरै धरै सिर गागरी रीती कै कै जाय ॥ २३९ ॥

मीरन बिछुरत ही पिया उलट गयौ संसार।
चंदन चंदा चांदनी भये जरावनहार ॥ २४० ॥

तुम बिन एती को करै कृपा जु मेरे नाथ।
मोहि अकेली जानकै दुख राख्यौ है साथ ॥ २४१ ॥

मीरन प्यारे तुम कह्यौ सपने देखौ मोहि।
तुव बिन नीद न आवही कैसें देखौं तोहि ॥ २४२ ॥

प्यारे मेरी नीद की बात तिहारे हाथ।
आवति है तुव साथ ही गई तिहारे साथ ॥ २४३ ॥

एकौ दुख निकस्यौ नहीं दूजौ पहुंच्यौ आय।
हियौ कहौं कै पुल कहौं दुख की किधौं सराय ॥ २४४ ॥

कहा करौं परगट नहीं लागति तोसौं बात।
प्यारे सपने मांझ है मेरी तेरी बात ॥ २४५ ॥

प्रीतम प्यारे के बिरह नागिनि सी यह रैन।
बांबी कारी बिष भरी देख भज्यौ है चैन ॥ २४६ ॥

घरी पहर सी पहर दिन दिन सो बरस समान।
छिन छिन दूबर बिन मिले मोहि तिहारी आन ॥ २४७ ॥
लाल पिया के बिछुरते बिछुर गये सब चैन।
भूख प्यास नींदौ गई ऊर्द्धबाऊ भये नैन ॥ २४८ ॥
जबलग चख मारग पिया आवन की औसेर।
तबलग हिय में है सखी हौंसनि के भये ढेर ॥२४९ ॥
प्रीतम तुव गुनबेलरी पसरी मो उर माहिं।
नेहनीर सों नित बढ़ै क्यौंहूं सूखत नाहिं ॥ २५० ॥
प्रीतम कौं व संदेसरा कहत हियौ रूंधि आय।
सूधे बात न आवही यौंही कहियो जाय ॥ २५१ ॥
प्रीतम कौं पतिया लिखी लिखत लिखी भर ताव।
वामें और कछू नहीं कै हाहा कै आव ॥ २५२ ॥
कर कांपत पतिया लिखत जल भरि आवत नैन।
कोरौ कागद हाथ दै मुख ही कहियो बैन ॥ २५३ ॥
कागद भीजत नयनजल कर कांपति मस लेत।
पापी बिरहा मन बसत बिथा लिखन नहिं देत ॥ २५४ ॥
तुव बिछुरत छिन में मरौं कहा जियौं बिन तोहि।
तुव मूरति मो मन बसे वही जियावत मोहि ॥ २५५ ॥
लिखन पढ़न की है नहीं कही सुनी नहिं जात।
अपने जिय तें जानियो मेरे जी की बात ॥ २५६ ॥

इहिं गुन पतिया ना लिखौं धरे रहौं मन मौन।
तुम प्रीतम जिय में बसौ पाती बांचै कौन॥ २५७॥
पतिया ताहि पठाइयै जो साजन परदेस।
निस दिन हियरे में बसै ताकौं कहा संदेस॥ २५८॥
वायस राहु भुजंग हर लिखत तिया ततकाल।
लिख लिख पोंछति फिर लिखति कारन कौन जमाल॥२५९॥
प्रीतम तुम मत जानियौ भयौ दूर कौ वास।
देह खेह कितहू रहै प्रान तिहारे पास॥ २६०॥
मन माला तुव नाम की जपत रहै दिन रैन।
नैन पियासे दरस के नैक न पावैं चैन॥ २६१॥
बासर भूख न नींद निस चित चिंता पिय तोरि।
लोयन गंगतरंग गति उठत हिलोर हिलोरि॥ २६२॥
पाती लिखन संदेस तहां जहां न पहुंचिये आप।
प्रीतिलुकंजन आंजके करियै मीत मिलाप॥ २६३॥
मन चाहत है मिलन कौं मुख देखन कौं नैन।
श्रवन जु चाहत हैं सुन्यौ पिय प्यारे के बैन॥ २६४॥
करकमलन पाती लिखी प्यारी चतुर सुजान।
इक इक अचर पै सखी वारौं तन मन प्रान॥ २६५॥
मेरौ मन तो पै रह्यौ तेरौ मन मो मांहि।
दोऊ व्याकुल बिन मिले चैन शरीरहि नांहि॥ २६६॥

तेरौ मेरौ एक मन दिखियत दोय शरीर।
बान जु मारै काम इक होत दुहुन कों पीर ॥ २६७ ॥
मसि लेखन कागद नहीं समाचार है मौन।
अब हम तुम एकै भये लिखै कौनकौं कौन ॥ २६८ ॥
नाद शब्द में बस कियौ मास वेच धन लेऊ।
मृगछाला पर गाढ़यौ यह मागौं मुहि देऊ ॥ २६९ ॥
मृगई चितयौ मृग्गतन लगे अहेरी घात।
मिलन रसोई रावरे त्वचा तपिन के गात ॥ २७० ॥
दधिसुत अबला अधर पर सोभा लें लटकंत।
मानौ भुजा सिकंदरी पंथी मनै करंत ॥ २७१ ॥
तन समुद्र मन लहर है रूप कहर दरियाव।
मानौ भुजा सिकंदरी पंथी यहां न आव ॥ २७२ ॥

॥ सोरठा ॥

बध विद्या गुन ज्ञान नेम चाव औ हर्ष बल।
ए तज होहिं अयान जिहिं घट बिरहा संचरै ॥ २७३ ॥

॥ अथ तुलसी कृत ॥

अपने अपने कर थपैं लिख पूजत तिय भीत।
सुफल फले मनकामना तुलसी प्रेम प्रतीत ॥ २७४ ॥
तुलसी जहां विवेक नहिं तहां न कीजे वास।
खेत खेल सब एक से करर कपूर कपास ॥ २७५ ॥

रामनाम आराधबौ तुलसी वृथा न जाय।
लरकाई कौ पैरबौ आगे होत सहाय ॥ २७६ ॥
जिम पनहारी जेवरी खैंचत कटै पषान।
तुलसी रसना राम कहु पाप कितक अनुमान ॥ २७७ ॥
तुलसी रसना तौ भली जो तू सुमिरै राम।
नातर काढ़ि निकासिये मुख में भलौ न चाम ॥ २७८ ॥
तुलसी बिलम न कीजिये भज लीजै रघुबीर।
तनतरकस तें जात हैं खास सारखे तीर ॥ २७९ ॥
एकै साधे सब सधै सब साधे सब जाय।
जो गहि सेवै मूल कौं फूलै फलै अघाय ॥ २८० ॥
स्वारथ सीता राम है परमारथ सिय राम।
तुलसी तेरौ दूसरे द्वार कहा है काम ॥ २८१ ॥
स्वारथ परमारथ सुलभ सकल एक ही ओर।
द्वार दूसरे दीनता उचित न तुलसी तोर ॥ २८२ ॥
तुलसी सोई चतुरता रामचरन लौ लीन।
पर मन पर धन हरन कौं वेश्या बड़ी प्रवीन ॥ २८३ ॥
चतुराई चूल्हे परौ आगी जम के घाय।
तुलसी राम सों प्रेम नहिं सो जर मूल नसाय ॥ २८४ ॥
मोर मोर सब कोउ कहत तू को कह निज नाम।
कै चुप साधे सुनि समझि कै तुलसी भज राम ॥ २८५ ॥

तुलसी अपने राम कों रीझ भजो कै खीज।
खेत परे तें जामिहैं उलटे सीधे बीज ॥२८६॥
सो कहते सुख ऊपजै ता कहते तम नास।
तुलसी सीता जो कहत राम न छांड़त पास ॥२८७॥
तुलसी अघ सब दूर गे रा अच्छर के लेत।
फिर नेरे आवत नहीं मा अच्छर पट देत ॥२८८॥
आप आपने तें अधिक जिहिं प्रिय सीता राम।
तुलसी ताके पग तरे मेरे तन कौ चाम ॥२८९॥
तुलसी जो पै राम सों नाहिन सहज सनेह।
मूंड़ मुड़ायौ वृथा ही भांड़ भये तजि गेह ॥२९०॥
मूंड़ उघारन किन कह्यो बरज रहे प्रिय लोग।
घर ही सती कहावती जरती नाह बियोग ॥२९१॥
यथा लाभ संतोष सुख रघुपति चरन सनेह।
तुलसी जो मन हाथ है जस कानन तस गेह ॥२९२॥
प्रीति रामपद नीति पथ चलै रागरस जीति।
तुलसी संतन के मते यही भक्ति की रीति ॥२९३॥
तुलसी खोटे दास कौ रघुपति राखत मान।
ज्यों मूरख उपरोहित हि देत दान जजमान ॥२९४॥
काहू कै धन धाम है काहू कै परवार।
तुलसी ऐसे दीन के सीता राम अधार ॥२९५॥

नहिं सेवा नहिं बुद्धि बल नहिं बिद्या नहिं नाम ।
तुलसी पतित पतंग की तू पति राखे राम ॥ १९६ ॥
एक भरोसे राम के किये पाप भर मोट ।
जैसे नारि कुनारि कौं बड़ी खसम की ओट ॥ १९७ ॥
तुलसी छल बल छांड़िकै करियै राम सनेह ।
अंतर कहा भर्त्तार सों जिन देखी सब देह ॥ १९८ ॥
सब देखे परखे लखे बहुत कहे कहा होय ।
तुलसी सीता राम बिन अपनौ नाहीं कोय ॥ १९९ ॥
ह्वै अधीन जाचै नहीं सीस नाय नहिं लेय ।
तुलसी मानी जाचकहि बिन रघुबर को देय ॥ २०० ॥
गंगा यमुना सरस्वती सात समुद्र भरपूर ।
तुलसी चातक के मते बिना स्वाति सब धूर ॥ २०१ ॥
एक भरोसो एक बल एक आस बिस्वास ।
स्वातबूंद रघुनाथ है चातक तुलसीदास ॥ २०२ ॥
ज्यों कामी के चित्त में चढ़ी रहत नित बाम ।
ऐसे हो कब लागिहो तुलसी के मन राम ॥ २०३ ॥
ज्यों गरीब की देह में माघ पूस को घाम ।
ऐसे हो कब लागिहो तुलसी के मन राम ॥ २०४ ॥
तीन टूक कोपीन के अरु भाजी बिन लोन ।
तुलसी रघुबर उर बसे इंद्र बापुरो कौन ॥ २०५ ॥

गुन सरूप बल द्रव्य कौं प्रीति करै सब कोय।
तुलसी प्रीति सराहिये जु इन तें बाहर होय॥ २०६॥
मीन काट जल धोइये खाए अधिक पियास।
तुलसी प्रीति सराहिये मुये मीत की आस॥ २०७॥
कहा कहौं छवि आज की भले बनेहो नाथ।
तुलसी मस्तक तब निवै धनुष बान लो हाथ॥ २०८॥
मुरली मुकट दुरायकै नाथ भये रघुनाथ।
तुलसी रुचि लखि दास की धनुष बान लियो हाथ॥ २०९॥
पशू गढ़ंते नर भयो भूले सींग अरु पूंछ।
तुलसी हरि की भक्ति बिन धृग डाढ़ी अरु मूंछ॥ २१०॥
प्रभुता कौं सब कोउ चहै प्रभु कौं चहै न कोय।
जो तुलसी प्रभु कौं चहै आजहि प्रभुता होय॥ २११॥
तुलसी घर के घेर में घरी घरी तन छीन।
कबहू ना बन बन फिरै कर करवा कोपीन॥ २१२॥
घर के घूमर घेर में रामचरन लौ लीन।
तुलसी ऐसे संत कौं कहा करवा कोपीन॥ २१३॥
काम क्रोध मद लोभ की जबलग मन में खान।
तबलग पंडित मूरखौ तुलसी एक समान॥ २१४॥
तुलसी या जग आयकै को न भयो समरत्थ।
इक कंचन अरु कुचन कौं किन न पसारै हत्थ॥ २१५॥

मन राखत बैराग में घर में राखत रांड ।
तुलसी किरवा नीम कौ चाख्यौ चाहत खांड ॥ २१६ ॥
जबलगि अंकुस सीस पर तबलग निर्मल देह ।
तुलसी अंकुस बाहिरे सिर पर डारत खेह ॥ २१७ ॥
तुलसी काया खेत है मनसा भयौ किसान ।
पाप पुन्य दोउ बीज हैं बवै सु लुनै निदान ॥ २१८ ॥
एक घड़ी आधी घड़ी आधी हू में आध ।
तुलसी संगत साध की हरै कोटि अपराध ॥ २१९ ॥
स्वामी तें सेवक बड़ौ जो निज धर्म समान ।
राम बांधि उत से जलधि कूद गये हनुमान ॥ २२० ॥
स्वामी कौं सेवक घने सेवक कौं प्रभु एक ।
तुलसी दो में सो बड़ौ जाके मन में टेक ॥ २२१ ॥
तुलसी मन कौं मुकुर है लखै सु लखन कोइ ।
जैसौ जाकौ भाव है तैसौ देखौ सोइ ॥ २२२ ॥
होत भले के अनभलो होत दानि के सूम ।
होत कपूत सपूत के ज्यौं पावक मह धूम ॥ २२३ ॥
नीच निचाई ना तजै साधन हू के संग ।
तुलसी चंदन बिटप बसि बिन बिष भौ न भुवंग ॥ २२४ ॥
आसन दृढ़ आहार दृढ़ सुमति ज्ञान दृढ़ होय ।
तुलसी बिना उपासना बिन दूलह की जोय ॥ २२५ ॥

तन सुखाय पंजर करै धरै रैन दिन ध्यान।
तुलसी मिटै न बासना बिना बिचारे ज्ञान ॥ २२६ ॥
आवत ही हरषै नहीं नैननि नहीं सनेह।
तुलसी तहां न जाइयै कंचन बरषै मेह ॥ २२७ ॥
हरष उठै आदर करै आवत जान अतीत।
तुलसी तबही जांनियै परमेश्वर सों प्रीत ॥ २२८ ॥
तुलसी या संसार में भांति भांति के लोग।
हिलियै मिलियै प्रेम सों नदी नाव संयोग ॥ २२९ ॥
तुलसी बिलम न कीजियै मिलियै सब से धाय।
को जाने किहिं भेष में नारायन मिल जाय ॥ २३० ॥
तुलसी कहत पुकारकै सुनो सकल दै कान।
हेम दान गज दान तें बड़ो दान सनमान ॥ २३१ ॥
परसुख संपति देखि सुनि जरहिं ते जड़ बिन आग।
तुलसी तिनके भाग तें चलै भलाई भाग ॥ २३२ ॥
तुलसी कबऊ न त्यागियै अपने कुल की रीति।
लायक ही सों कीजियै ब्याह बैर अरु प्रीति ॥ २३३ ॥
ज्ञान गरीबी हरिभजन कोमल बचन अदोष।
तुलसी कबऊ न छोड़ियै छमा सील संतोष ॥ २३४ ॥
तुलसी सुपुरुष सेइयै जब तब आवहि काम।
लंक बिभीषन कैां दई बड़े दुखित में राम ॥ २३५ ॥

तुलसी निज कीरति चहै पर की कीरत खोय।
तिनके मुख मसि लागिहै मिटै न मरिहै धोय ॥ २३६ ॥

बऊत गई आनंद सों रही नैक सी आय।
तुलसी चिंता मति करै श्री रघुनाथ सहाय ॥ २३७ ॥

तुलसी जग में आयकै कर लीजे दो काम।
देवे कौं टुकड़ा भला लेवे कौं हरिनाम ॥ २३८ ॥

तुलसी या संसार में पंचरत्न हैं सार।
साधु मिलन अरु हरिभजन दया दीन उपकार ॥ २३९ ॥

बैर सनेह सयान कौं तुलसी जो नहिं जान।
सो किम प्रेममग धरत पग पशु बिनपूंछ बखान ॥ २४० ॥

तुलसी तृन जलकूल कौ निर्धन निपट निकाज।
कै राखै कै संग चलै बांह गहे की लाज ॥ २४१ ॥

लिख लिख लिख सब जग लिख्यौ पढ़ि पढ़ि पढ़ि कहा कीन्ह।
बढ़ि बढ़ि बढ़ि घट घट गए तुलसी राम न चीन्ह ॥ २४२ ॥

॥ अथ श्लेष ॥

पीव कचौरी है सखी पूरी परती नाहिं।
मन लडुआ करती फिरी बिरहबरी मन माहिं ॥ २४३ ॥

कचौरी पिय ए सखी पकौरी पिय नाहिं।
बराबरी कैसैं करौं पूरी परै कि नाहिं ॥ २४४ ॥

अमली वरसें हो रही पीपर पास न आउं ।
जामुनि भेद न पावहीं तासों मैं दढलाउं ॥ २४५ ॥
करना फूल्यौ ए सखी सु पी बिन क्या करना ।
जो प्रीतम कर ना गहै तो जी ले क्या करना ॥ २४६ ॥
नारंगी हैां पीय सें यह अनारिपन मोहि ।
जो मैं पीवै सेवती सदा सदाफल होहि ॥ २४७ ॥
तो ताकत निस दिन रहैा तू ती निपट अजान ।
लाल कहैं सो कीजियै तज मैंना की बान ॥ २४८ ॥
सूक छुहारा तन भया गिरी परै सब देह ।
किस मिस लिखूं संदेसरा मैा जल गो यह नेह ॥ २४९ ॥
करकूई बरटोई नहीं तवा टोकनी नाहिं ।
चैाके गरुवे थारियां रब न रसोई माहिं ॥ २५० ॥
पालक लेने हैां गई पिय सोया पाया ।
मैं थी निपट अजान लाल मैं चूक जगाया ॥ २५१ ॥

॥ सोरठा ॥

कीकर पाकर ताढ़ जामन फलसा आमिला ।
सेव कदम कचनार पीपल रत्ती तू न तज ॥ २५२ ॥

॥ [illegible] प्रश्नोत्तर ॥

कहा न अबला करि सकै कहा न सिंधु समाय ।
कहा न पावक में जरै काल काहि नहिं खाय ॥ २५३ ॥

सुत नहिं अबला करि सकै मन नहिं सिंधु समाय।
धर्म्म न पावक में जरै नाम काल नहिं खाय ॥ २५४ ॥
प्रीतम या कलिकाल में कह ऐसो को आहि।
एक वस्तु जिहिं सौंपिये दे दस गुन करि ताहि ॥ २५५ ॥
सुनौ अर्थ मनमोहनी है यह धरा सुभाइ।
बोये एकै बीज के दे दस गुन करि ताइ ॥ २५६ ॥
ऐसो बड़भख कौंन है खात जु नाहिं अघाय।
खात खात भोजन घटै तब आपहि मर जाय ॥ २५७ ॥
बड़भख ज्वाला जानिये इन लकरी बड़ खाय।
जब भोजन घट जात है तब सीरी ह्वै जाय ॥ २५८ ॥
दृग मूंदे सब देखिये कौंन मुकुर सो ईठ।
जो चख खोल निहारिये कछू न आवै दीठ ॥ २५९ ॥
वह सुपने को मुकुर है सोवत सब दिखराय।
जागे कछु सूझै नहीं जब दृग दै खुल जाय ॥ २६० ॥
रहै भाकसी में सदा चिंता कछु न जनाय।
रुदन करै छूटै जबै वाकौ नाम बताय ॥ २६१ ॥
बालक वाकौ नाम है गर्भ भाकसी जान।
जब निकसै तब रोयहै वाकौ यहै बखान ॥ २६२ ॥
तिय बिगार नर सिर परै नर बिगार सिर तीय।
ए चारौं धौं पूछिये कहौ सोचकै जीय ॥ २६३ ॥

भूमि बिगारति खाननी नाम खान कौं लेंह्र ।
हांन करे मंजार त्यौं दोष मंजारी देह्र ॥ २६४ ॥
न्यारे न्यारे पुरुष हैं सकल होंहि इक ठाम ।
तब सब कोऊ कहत हैं उनकौ नारी नाम ॥ २६५ ॥
मनके तौलौं पुरुष हैं न्यारे न्यारे आहि ।
धागे माहिं परोइये माला कहिये ताहि ॥ २६६ ॥
न्यारी न्यारी नारि हैं मिलें जु पुरुषन माहिं ।
तब सब कोउ नर भाखिहैं नारी कहियत नाहि ॥ २६७ ॥
अश्व अश्वनि इक संग हैं जबहि कहत दल होय ।
कहत सबे घोरा जुरे घोरी कहत न कोय ॥ २६८ ॥

॥ अथ कुंडलिया ॥

बैरी बंदुआ बानियां ज्वारी चोर लबार ।
बिभचारी रोगी ऋणी नगरनारि कौ यार ।
नगरनारि कौ यार भूलि परतीत न कीजे ।
सौ सौ सौंहें खाय चित्त एक्रौ नहिं दीजे ।
कह गिरधर कविराय परे आवे अनघेरी ।
हित की कहे बनाय जानिये पूरौ बैरी ॥ १ ॥
बिना बिचारे जो करे सो पाछें पछिताय ।
काम बिगारे आपनो जग में होत हंसाय ।

जग में होत हंसाय चित्त में चैन न पावै।
खान पान सनमान राग रंग मनहिं न भावै।
कह० दुःख कछु टरत न टारे।
खटकत है जिय मांहिं कियो जो बिन बिचारे॥ २॥
बीती ताहि बिसार दे आगे की सुध ले।
जो बनि आवै सहज में ताही में चित दे।
ताही में चित दे बात जोई बनि आवै।
दुरजन हंसे न कोय चित्त में खेद न पावै।
कह० यहै कर मन परतीती।
आगे कों सुख होय समुझ बीती सो बीती॥ ३॥
सांई ये न बिरुझिये गुरु पंडित कबि यार।
बेटा बनिता पौरिया यज्ञ करावनहार।
यज्ञ करावनहार राजमंत्री जो होई।
बिप्र परोसी बैद आप कों तपै रसोई।
कह० यहै कैसी समझाई।
इन ते रहते तरह दिये बनि आवै सांई॥ ४॥
सांई अपने चित्त की भूल न कहिये कोय।
तबलग मन में राखिये जबलग कारज होय।
जबलग कारज होय भूल कबहूं नहिं कहिये।
दुरजन तातो होय आप सीरे ह्वै रहिये।

कह० बात चतुरन के ताँई।
करतूती कहि देति आप कहिये नहिं साँई ॥ ५ ॥
चिंता ज्वाल शरीर बन दावा लगि लगि जाय।
प्रगट धुंआं नहिं देखिये उर अंतर धुंधुवाय।
उर अंतर धुंधुवाय जरै जौं काच की भट्टी।
जरगौ लोहू मास रह गई हाड़ की ठट्टी।
कह० सुनौ हो मेरे मिंता।
वे नर कैसें जियें जाहि तन व्यापै चिंता ॥ ६ ॥
राजा के दरबार में जैये समयौ पाय।
साँई तहां न बैठिये जहां कोऊ देय उठाय।
जहां कोऊ देय उठाय बोल अनबोले रहिये।
हंसिये ना हहराय बात पूछे तें कहिये।
कह० समय सों कीजै काजा।
अति आतुर नहिं होय बहुरि अनखैहै राजा ॥ ७ ॥
कृतघन कबहुं न मानई कोटि करौ जो कोय।
सरबस आगै राखिये तऊ न अपनौ होय।
तऊ न अपनौ होय भले की भली न मानै।
काम काढ़ि चुप रहै फेर तिहिं नाहिं पिछानै।
कह० रहत नित हो निर्भय मन।
मित्र शत्रु सब एक दाम के लालच कृतघन ॥ ८ ॥

जाकी धन धरती लई ताहि न लीजे संग।
जो संग राखे ही बने तौ करि राखु अपंग।
तौ करि राखु अपंग फेर फरकै सो न कीजै।
कपट रूप बतराय ताहि कौ मन हर लीजै।
कह॰ खुटक जैहै नहि ताकी।
कोटि दिलासा देउ लई धन धरती जाकी ॥ ९ ॥
सांईं अपने भ्रात कौं कबऊ न दीजे त्रास।
पलक दूर नहिं कीजिये सदा राखिये पास।
सदा राखिये पास त्रास कबहूं नहिं दीजै।
त्रास दियौ लंकेश तासकी गति सुनि लीजै।
कह॰ राम सों मिलियौ आई।
पाय विभीखन राज लंकपति बाजौ सांईं ॥ १० ॥
सांईं बेटा बाप के बिगरे भयौ अकाज।
हिरनाकुश अरु कंस कौ गयौ दुहुन कौ राज।
गयौ दुहुन कौ राज बाप बेटा के बिगरे।
दुसमन दावादार भये महिमंडल सिगरे।
कह॰ उन्हैं काहू न बताई।
पिता पुत्र की रार लाभ एकौ नहिं सांईं ॥ ११ ॥
सांईं नदी समुद्र कौं मिली बड़पनौ जानि।
जाति नाश भयौ मिलत ही मानमहत की हानि।

मानमहत की हानि कहौ अब कैसी कीजै।
जल खारी ह्वै गयौ ताहि कहु कैसें पीजै।
कह॰ कछ मच्छन सकुचाई।
बड़ो फजीहत चार भयौ नदियन कौ सांई ॥११॥
सांई सन अरु दुष्टजन इनकौ यही सुभाव।
खाल खिंचावैं आपनी परबंधन के दाव।
परबंधन के दाव खाल अपनी खिंचवावैं।
मूड़ काटिकै कूटियै तऊ बाज न आवैं।
कह॰ जरै आपनी कटाई।
जल में गिरि सर गये तऊ छोड़ी न बुराई ॥१२॥
सांई समौं न चूकिये यथा शक्ति उनमान।
को जाने को आयहै तेरी पौरि प्रमान।
तेरी पौरि प्रमान समौं असमौं तकि आवै।
ताकों तू मन खोलि अंक भरि कंठ लगावै।
कह॰ सबै यामें सधि आई।
सीतल जल फल फूल समौं जिन चूकौ सांई ॥१४॥
सांई हरि ऐसी करी बल के द्वारे जाय।
पहलै हाथ पसारकै बहुरि पसारे पाय।
बहुरि पसारे पाय सतौ राजा न सतायौ।
भूमि सबै हरि लई बांधि पताल पठायौ।

कह० राव रावनि के साँई।
छल बल करि परभूमि चीन को हरप्यौ साँई ॥ १५ ॥
साँई पुर याको पज्यौ आसमान तें आय।
पंगु हि आँधे छोरिके पुरजन चले पराय।
पुरजन चले पराय अंध इक मतौ विचार्यो।
पंगु कंध कै लियौ इष्ट वाको पग धार्यो।
कह० मते कै चलिये साँई।
बिना मते कौ राज गयौ रावन कौ साँई ॥ १६ ॥
सोना लेने पी गये सूनो कर गए देस।
सोना मिल्यौ न पी फिरे रूपा हो गये केस।
रूपा हो गये केस रूप सब रोय गँवायौ।
घर बैठी पछताय कंत अजहूं नहिं आयौ।
कह० लोन बिन सबै अलोना।
जब जोबन ढल जाय कहा लै करिये सोना ॥ १७ ॥
मोती लेने पी गये खार समुंदर तीर।
मोती मिले न पी मिले नैननि टपकत नीर।
नैननि टपकत नीर पीर अब कासों कहिये।
बीते बारह मास पिया बिन घर हो रहिये
कह० [illegible] डारति मगनैनी।
भर जाओ वह सिंधु जहां उपजत है मोती ॥ १८ ॥

हीरा अपनी खान कौं मन मैं मन पछिताय।
गुन कीमत जानी नहीं तहां बिकान्यौ आय।
तहां बिकान्यौ आय छेद करहा में बांध्यौ।
मीठौ लगैं न मास लौन बिन फूहर रांध्यौ।
कह० धरौ कैवेंके धीरा।
गुन कीमत घट गई यहै कहि रोयौ हीरा ॥ १९ ॥
सांई अगर उजार में जरत महा पछताय।
गुनगाहक कोऊ नहीं जाहि सुबास सुहाय।
जाहि सुबास सुहाय सु तौ बन में कोऊ नाहीं।
कै गीदड़ कै हिरन सु तौ कछु जानत नाहीं।
कह० बड़ौ दुख यहै गुसांई।
अगर आक की राख भई मिलि एकौ सांई ॥ २० ॥
सांई हंस न आवही बिन सरवर जल पास।
निर्फल तरवर तें डरै पंछी पथिक उदास।
पंछी पथिक उदास छांह बिश्राम न पावैं।
जहां न प्रफुलित कमल भ्रमर तहां भूल न आवैं।
कह० जहां यह बूझ बड़ाई।
तहां न करियै सांझ प्रात ही चलियै सांई ॥ २१ ॥
हंसा उड़ि दिस कौं चलैं सरवर मीत जुभार।
हम तुम कबहू भेटिहैं संदेस न ब्योहार।

संदेस न व्यौहार भयौ पूरौ जल रहियौ।
जीव जंतु चिर जियौ सदा उत्तम फल लहियौ।
कह॰ केल की रही न संसा।
है असीस उड़ि चले देस अपने कौ हंसा ॥ २२ ॥

हंसा यहां रहियै नहीं सरवर गयौ सुखाय।
जो रहियै तो सीस पर बगुला दैहैं पाय।
बगुला दैहैं पाय कीच कारे ह्वै जैहौ।
लोकहंसाई होय कहा कछु इज्जत पैहौ।
कह॰ मोहि इक यही है संसा।
याहू तें कछु घाट और होयहै हंसा ॥ २३ ॥

सांई एकै गिर धरौ गिरधर गिरधर होय।
हनूमान बहु गिर धरे गिरधर कहै न कोय।
गिरधर कहै न कोय हनू द्रोनागिर लायौ।
ताकौ किनका टूट परौ सो कृष्ण उठायौ।
कह॰ बड़ेन की बड़ी बड़ाई।
थोरे ही जस होय जसी पुरुषन कौं सांई ॥ २४ ॥

नैना अब परबस परें उत्तम गुन सब जांय।
वे फिर फिर चोरी करैं ये फिर फिर लपटांय।
ये फिर फिर लपटांय नैन बहुरौं भरि आव।
खान पान सुख त्याग रात दिन हीं दुख पाव।

कह० सुनौ तुम श्रवननि बैना।
लोग जु देंय कलंक परैं जब परबस नैना ॥ २५ ॥
सांई सुमन पलास पर सुआ रह्यौ भी आय।
लाल कली सी चोंच पर मधुकर बैठो आय।
मधुकर बैठो आय सुआ ततकाल चबायौ।
कोटि कष्ट दुख पाय मरू करि छूटन पायौ।
कह० बेग घर बजै बधाई।
दीजै बिदा पलास जियत घर जैये सांई ॥ २६ ॥
सांई तेली तिलन सों कियौ नेह निर्बाहि।
छांटि फटकि उज्जल करे दई बड़ाई ताहि।
दई बड़ाई ताहि पंच यह सिगरे जानी।
दे कोल्हूं में पेरि करी है इकतर घानी।
कह० मया की यही बड़ाई।
अमया सब तें भली मान मति मेरी सांई ॥ २७ ॥
सांई सुआ प्रबीन अति बानी बदति विचित्र।
रूपवंत गुन आगरौ रामनाम सों चित्त।
रामनाम सों चित्त और देवन अनुराग्यौ।
जहां जहां तू गयौ तहां तू नीकौ लाग्यौ।
कह० सुआ चूक्यौ चतुराई।
सेमल सेयौ वृथा बिस्वास करि भूल्यौ सांई ॥ २८ ॥

धोखेदारौं के सुआ गयौ नारियर खान।
सम खाई पाई सजा फिर लाग्यो पछतान।
फिर लाग्यौ पछतान बुद्धि अपनी कौं रोयौ।
निरगुनियन के पास बैठि गुन अपनो खोयौ।
कह० कहूं जैये नहिं ओखे।
चोंच खटककै टूटि सुआ दाड़िम के धोखे॥ २९॥
गदहा थोरे दिननि में खूंद खाय इतरात।
अफरान्यौ मारन कहै ऐराकी कै लात।
ऐराकी कै लात देत संका नहिं आनै।
ऐराकी सह रहत ताहि कोऊ नहिं जानै।
कह० रहैगी कौलौं दुबहा।
ऐराकी की लात फेर कैसें सहै गदहा॥ ३०॥
मऊआ नित उठ दाख सों करत मसलहत आय।
हम तुम सूखे एक से कहजत हैं रसराय।
कहजत हैं रसराय बिलग जिन याकौ मानो।
मधुर मष्ट हम अधिक कछू जिन जिय में जानो।
कह० कहत साहिब सों रऊआ।
तुम नीची कुल बेलि वृच्छ हम ऊंचे मऊआ॥ ३१॥
गुलतुर्रा सों जायकै बाद करै जु करील।
हम तुम सूखे एक से पूछ देखिये भील।

पूछ देखिय भील भेद जो जाने मेरौ।
तू ह पूछ बुलाय भेद जो जाने तेरौ।
कह० नातरि हौं करिहौं ऊर्रा।
अब जिन भूलि गुमान करै फिर हौं गुलतुर्रा॥ ३२॥
बगुला झपटत बाज पै बाज रहे सिर नाय।
कुलहा दोने पग बंधे खोटें दे फहराय।
खोटें दे फहराय कहै जे जो मन आवै।
कुलहा ले पग छोरि धनी बिन कौन छुड़ावै।
कह० अरे तू सुन खग बगुला।
समौ पलट्यौ जान बाज पै झपटै बगुला॥ ३३॥
कौआ कहत मराल सों कौन जाति को गोत।
तोसो बदरूपी महा कोऊ न जग में होत।
कोऊ न जग में होत कुटिल मैले मलखाने।
उसर बैठ मर्याद भ्रष्ट आचार न जाने।
कह० कहां तें आयौ हौआ।
धन्य हमारौ देस जहां सज्जन जन कौआ॥ ३४॥
सांईं घोड़न के अछत गदहन आयौ राज।
कौआ लीजै हाथ कै दूर कीजिये बाज।
दूर कीजिये बाज राज ऐसौ ही आयौ।
सिंह कैद में कियौ स्यार गजराज चढ़ायौ।

कह० जहां यह बूझ बड़ाई।
तहां न कीजै सांझ सवारे हि चलियै सांई ॥ २५ ॥
भौंरा ये दिन कठिन हैं दुख सुख सहौ शरीर।
जबलग फूलै केतकी तबलग बिलम करीर।
तबलग बिलम करील हर्ष मन में नहि कीजै।
जैसी बहै बयार पीठ तब तैसी दीजै।
कह० होय जिन जिय में बौरा।
सहै दुःख अरु सुख एक सज्जन अरु भौंरा ॥ २६ ॥
हिरना बिचस्यौ सिंह सों ओझर खुरी चलाय।
झारखंड झीनौ पस्यौ सिंहा गयौ बराय।
सिंहा गयौ बराय समौं सामर्थ बिचाखौ।
कुलहि कालमा लाय हंस्यौ हंसकै ही चाख्यौ।
कह० मोहि याही बन फिरना।
आज गई करि जांउं काल्ह हौं हौं के हिरना ॥ २७ ॥
पानी बाढ़ौ नाव में घर में बाढ़ौ दाम।
दोऊ हाथ उलीचियै यही सयानौ काम।
यही सयानौ काम नाम ईश्वर कौ लीजै।
परस्वारथ के काज सीस आगे धर दीजै।
कह० बड़ेन की यही है बानी।
चलियै चाल सुचाल राखियै अपनौ पानी ॥ २८ ॥

मैं ना जानौं जीव की तौ ताकौं दिन रैन।
बक बक री केता कहौं मोर कहां तें चैन।
मोर कहां तें चैन दुनिया में तीतह जानौ।
गलि गलि आई बाज मौत याही तें ठान्यौ।
कह० सुन कुरंग के बैना।
पिय गल डारी बांह हंसमुख देखौं मैंना॥ ३९॥
हुक्का बांध्यौ फेंट में नै गहि लीनो हाथ।
चले राह में जात है बंधी तमाखू साथ।
बंधी तमाखू साथ गैल कौ धंधा भूल्यौ।
गई सब चिंता दूर आग देखत मन फूल्यौ।
कह० जु जम कौ आयौ रुक्का।
जीव ले गयौ काल हाथ में रह गयौ हुक्का॥ ४०॥

॥ अथ बरवा ॥

हरिपद रुचिर तरुनियां चढ़ मन मोर।
तर भवसागर अबहीं दिन रहे थोर॥ १॥
मोहन के मुख सोहन जोहन जोग।
रूप असन अंखियन कौं भसक रोग॥ २॥
ऊंच जाति बाह्मनियां बरनि न जाय।
दौर दौर पा लगी सीख छुवाय॥ ३॥

बड़ि बड़ि आंख बरनियां छिय हरि लेय।
पतरी के अस टोभ करेजवा देय ॥ ४ ॥
घाट बाट लै बानिनि हाट बईठ।
उहकत काऊ न जानी बतियन मीठ ॥ ५ ॥
नीक जाति कुरमिनि की खुरपी हाथ।
आपन खेत नरावै पी के साथ ॥ ६ ॥
अहिरनि मन की गहिरनि उतर न देय।
नैना करै मथनियां मन मथ लेय ॥ ७ ॥
हलुआ अस हलवनियां गलवा लाल।
लाल लाल द्वै जुबना नैन रसाल ॥ ८ ॥
टेढ़ि माग नायन की नहरिनि हाथ।
फिर पाछैं जो हेरै महतो साथ ॥ ९ ॥
चीकन गात तेलनियां बरनि न जाय।
चितवत रूप अनूप हृष्ट लपटाय ॥ १० ॥
मैली एक धोबनियां ऊजर गांव।
भुली कंत बिन लै लै कलपति नांव ॥ ११ ॥
झमक चली कसदनियां दै दै सैन।
धरै करेजवा छुरिया कर कर पैन ॥ १२ ॥
नीक जाति तुरकिन की बऊतें लाज।
जानै पिय की सेवा और न काज ॥ १३ ॥

सुंदरि तरुनि तंबोरिनि तरवन कान ।
हेरै हंसै हरैं मन फेरै पान ॥ १४ ॥
भरभूंजिनि कन भूंजहि बैठि दुकान ।
फुटका करति विहंसिकै बिरही प्रान ॥ १५ ॥
कलवारी मदमाती कामकलोल ।
भर भर देति पियलवा मधुर ठठोल ॥ १६ ॥
परदवार तन नाजुक कैथिनि नारि ।
संक भरै घूंघट दृग चली निहारि ॥ १७ ॥
अचरज करत लुहरिया पिय के पास ।
जाहि छुवत बिन जिय के लेइ उसास ॥ १८ ॥
खेल फाग धन बकरी धूरि उड़ानि ।
गावै बालम बरवै ऋतु नियरानि ॥ १९ ॥
निस दिन बसै हिरदवा मिलन न हाय ।
जिमि पानी के चंदहि छुवै न कोय ॥ २० ॥
पात पात करि ढूंढ्यो सब बन बीन ।
घटहि छुते मोरे बालम परे न चीन ॥ २१ ॥
हाथ उपरिया रह गई गिर गई आगि ।
घर की पौरि बिसरि गई गौंहनि लागि ॥ २२ ॥
बालम सुरत बिसर गई कहत संदेस ।
एकौ पथिक न बहुरो कस वह देस ॥ २३ ॥

बालम हो मेरे बालम तुम कस कौन।
लोग कुटम हम छाड़सि तुम मन दीन ॥ २४ ॥
बालम तुम तन चितवत गागरि फूटि।
अंचरा गौ फहराय धरम गौ छूटि ॥ २५ ॥
सूर तपै सिर ऊपर कितऊ न छांह।
ठाढ़ी पथहि निहारौं कत मोरौ नांह ॥ २६ ॥
बालम की सुध आवत यह गति मोर।
निकस निकस जिय पैसत जौं चकडोर ॥ २७ ॥
बिरहनि ढूंढन बन गई बाघ भिटान।
बघवा सूंघ न खाइल बिरहनि जान ॥ २८ ॥
नित उठ जाऊं पनघट वा आवऊं रोय।
बालम की उन हरवा दिखऊं न कोय ॥ २९ ॥
बोली आनि कोयलिया मधुरी बानि।
मऊआ रोवै ठाढ़ आम बौरानि ॥ ३० ॥
प्रेम प्रीति कौ बिरवा चलेऊ लगाय।
सीचन की सुधि लीजो बिसर न जाय ॥ ३१ ॥
अस मन होत बलम अब कतऊ न जाय।
रखियै रातऊ दिवस हिरदवा लाय ॥ ३२ ॥
पात पात कर लूटिस बिपन समाज।
राजनीति यह कहि कहि कस चतुराज ॥ ३३ ॥

चलत न सोच करसि सखि सगुन सभाग।
है ससुरार तुम्हारि ऊ घन बन बाग ॥ ३४ ॥
कारे बरन कोयलिया कुहकति आनि।
अंबवा चढ़ि डर पावति पिय बिन जानि ॥ ३५ ॥
भै न भेंट बालम सन भटकिऊ आइ।
धाय धाय बन खाय देख नहि जाइ ॥ ३६ ॥
बालम चलत न भेंटे छतिया लाय।
सोई कसक करेजवा कसकति आय ॥ ३७ ॥
बदरन धरी धनुहियां करत अचेत।
बुंदियन के करि बान करेजवा देत ॥ ३८ ॥
नैना भीतर मितवा रहत जुठाइ।
निकस न कबहू भेंटिस अस मन गाइ ॥ ३९ ॥
हरद बरन मोरी देही पियहि बियोग।
कौन बिथा मुहि बूझऊ बाउर लोग ॥ ४० ॥

॥ अथ अरल ॥

भज सुआ हरिनाम कि बैठा ताक में।
दिना चार का रंग मिलेगा खाक में।
साहिब बेग संभार काल सों रार है।
जम के हाथ गुलेल फटक्का यार है ॥ १ ॥

यह दुनिया बाजीद पलक का पेखना।
यामें बहुत बिकार कहो क्या देखना।
सब जीवन का जीव जगत आधार है।
पर हां बाजीदा जो न भजै भगवंत कठी में छार है ॥ २ ॥
दो दो दीपक बाल महल में सोवते।
नारी से कर नेह जगत नहीं जोवते।
सोंधा तेल लगाय पान मुख खांयगे।
बिना भजन भगवान कि मिथ्या जांयगे ॥ ३ ॥
रामनाम की लूट फबै है जीव कौं।
निस बासर कर ध्यान सुमिर तू पीव कौं।
यहै बात परसिद्ध कहत सब गांव रे।
पर हां बाजीदा अधम अजामिल तरे नरायन नांव रे ॥ ४ ॥
गाफिल हूए जीव कहो क्यों बनत है।
या मानुष के सांस जु कोऊ गनत है।
जाग लेय हरिनाम कहां लों सोय है।
पर हां बाजीदा चाकी के मुख पड़ो सु मैदा होय है ॥ ५ ॥
आज सुनै कै काल्ह कहत हों तुझकौं।
भावें बैरी जान जीव तू मुझकौं।
देखत अपनी दृष्ट खता क्यों खात है।
पर हां बाजीदा लोहे कौ सौ ताव जन्म यह जात है ॥ ६ ॥

केते अर्जुन भीम जरा जसवंत से।
केते गिने असंक बली हनमंत से।
जिनकी सुन सुन हांक महागिर फाटते।
पर हां बाजीदा तिन धर खायो काल जों इंद्रहि डांटते॥७॥
हों जानो कछु मीठ अंत कछ तीत है।
देखौ हृदय विचार यह देह अनीत है।
पान फूल रस भोग अंत कह रोग है।
पर हां बाजीदा प्रीतम प्रभु के नाम बिना सब सोग है॥८॥
देख तमाशा अजब जो लगी पठान नू।
होया खड़ा निहंग पकड़ सुजान नू।
लगा लुटावन आप आपना सब्ब जर।
पर हां बाजीदा कौंन साहिब नू अक्खे यों नहि योंकर॥९॥
नबियां दा सिर ताज थंभ दरगाह दा।
सबना दा महबूब रसूल खुदाय दा।
उम्मत दे पुत जीवन उस दी जान मर।
पर हां बाजीदा कौन साहिब नू अक्खे यों नहि योंकर॥१०॥
बिना बास का फूल न ताहि सराहिये।
बहुत मित्र की नारि सों प्रीति न चाहिये।
सठ साहिब की सेव कबहूं नहि कीजिये।
पर हां बाजीदा बिद्या बिंदु अरु जिंद अकाज न दीजिये॥११॥

इकराम कहत कलमा न छूवा कोइ रे।
अर्ध नाम पाषान तरा निरलोइ रे।
कर्म कि केतिक बात विलग ह्वै जाइगे।
पर हां बाजीदा हाथी के असवार कुते क्यौं खाइगे॥१२॥
कुंजरमन मैमत्त मरै तौ मारियै।
कामिनि कनक कलेस टरै तौ टारियै।
हरिभक्तन सों नेह पलै तौ पालियै।
पर हां बाजीदा रामभजन में देह गलै तौ गालियै॥१३॥
जेती बोली बानी सो तो बह रही।
हृदय कपट की बात तौ मुख सों का कही।
बोलै बोलो बोल बुलाई पीउ की।
पर हां बाजीदा ऊपर की सब झूठ फलैगी जीउ की॥१४॥
घड़ी घड़ी घड़ियाल पुकारै कही है।
बऊत गई है अवध अल्प ही रही है।
सोवे कहा अचेत जाग जप पीउ रे।
पर हां बाजीदा चला है आज कि काल बटाऊ जीउ रे॥१५॥
जो जिय में कछु ग्यान पकर रऊ मन्न कौं।
निपट हि हरि कौ हेत सु जाचत जन्न कौं।
प्रीति सहित दिन रैन राम मुख बोलई।
पर हां बाजीदा रोटी लीयें हाथ नाथ संग डोलई॥१६॥

पानी लगै न ताहि तहां लौं गोय रे।
रीते हाथ न जाय जगत सब जोय रे।
यह माया बाजीद चले क्या साथ रे।
बहते पानी बीर पखालो हाथ रे॥ १७॥
पाहन कोरा रहै बरसते मेह में।
घाल धरी बाजीद दुष्टता देह में।
डसै श्रोचका आय मूंड गहि रोइये।
पर हां सर्पहि दूध पिलाय बृथा ही खोइये॥ १८॥
बदन बिलोकत नैन भई हौं बावरी।
धारे दंड बिभूत पगन दै पांवरी।
कर जोगनि कौ भेष सकल जग डोलिहौं।
पर हां बाजीदा ऐसो मेरे नेम पीउ पीउ बोलिहौं॥ १९॥
एकै नाम अनंत किन्हूंके लीजिये।
जन्म जन्म के पाप चुनौती दीजिये।
लेकर चिनगी आग आन धर अब्ब रे।
पर हां बाजीदा कोठी भरी कपास जाय जल सब्ब रे॥ २०॥

॥ अथ छप्पय ॥

तिलक भाल बनमाल अधिक राजत रसाल छबि।
मोरमुकुट की लटक चटक बरनत अटकत कबि।
पीतांबर फहरान मधुर मुसक्यान कपोलन।
रच्यौ रुचिर मुख पान तान गावत मृदु बोलन।

रति कोटि काम अभिराम अति दुष्ट निकंदन गिरधरन।
आनंदकंद ब्रजचंद प्रभु सु जय जय जय असरनसरन ॥१॥
मोरमुकुट मनजटित कर्नकुंडल हेम झलकैं।
मृगमद तिलक लिलाट कंवल लोचन दल पलकैं।
घूंघरवारी अलक कौस्तुभ कंठ बिराजै।
पीत बसन बनमाल मधुर मुरली धुन बाजै।
करत कोटि आभा बरन सु चंद सूर्य्य देखत लजत।
ब्रह्म देव दे भक्तजन सु स्याम रूप प्रीतम भजत ॥२॥
चतुरानन सम बुद्धि बिदित जो होय कोटि धर।
एक एक धर प्रतिनि सीस औ होय कोटि बर।
सीस सीस प्रति बदन कोटि करतार बनावै।
एक एक मुख मांहिं रसन फिर कोटि लगावै।
रसन रसन प्रति सारदा कोटि बैठि बानी बकहिं।
नहिं जन अनाथ के नाथ की महिमा तबऊ न कहि सकहिं॥३॥
भूमि परत अवतरत करत बालक बिनोद रस।
फुनि जोबनमदमत्त तरुन इंद्री अनंग बस।
बिषय हेतु जड़ फिरत बहुरि पहुंच्यौ बृद्धप्पन।
गयौ जन्म गुन गनत अंत कछु भयौ न अप्पन।
थिर रहत न कोउ नरपति न बल रहत एक चहुं जुग जस।
सोई अजर अमर नरहर निरखि जु पियत भक्ति भगवंत रस ॥४॥

बिमल चित्त करि मित्र प्रभु छल बल बस किज्जिय।
प्रभु सेवा बस करिय लोभवंत हि धन दिज्जिय।
युवति प्रेम बस करिय साध आदर बस आनिय।
महाराज गुन कथन बंधु समरस सनमानिय।
गुरु निमित सीस रस सों रसिक विद्या बल बुध मन हरिय।
मूरख विनोद सुकथा बचन सुभ सुभाव जग बस करिय॥ ५॥
जाचक लघु पद लहै कामातुर जो कलंक पद।
लोभी दुरजस लहै असन लालची लहै गद।
मूरख औगुन लहै लहै पढ़ि पढ़ि गुन पंडित।
सूर सुरन जै लहै रहै रन मंह महिमंडित।
निर्वान सु पद जोगी लहै जो न गहै ममता सुमति।
सुख भगत जगत जन लहै करै जु नौ विधि भक्ति अति॥ ६॥
धिक मंगन बिन गुनहिं गुन सु धिक सुनत न रीझै।
रीझक धिक बिन मौज मौज धिक देत जो खीझै।
देवो धिक बिन सांच सांच धिक धर्म न भावै।
धर्म सु धिक बिन दया दया धिक अरि[illegible]कंह आवै।
अरि धिक चित्त न सालई चित्त धिक जहां न उदार मति।
मति धिक केसव ज्ञान बिन ज्ञान सु धिक बिन हरिभगति॥७॥
न कुछ कृपा बिन विप्र न कुछ कायर जिय सची।
न कुछ नीति बिन नृपति न कुछ अच्छर बिन मची।

न कुछ बाम बिन धाम न कुछ बिन गथ गहवाई।
न कुछ कपट कौ हेत न कुछ मुख आपबड़ाई।
न कुछ दान सनमान बिन न कुछ सुभोजन आसु दिन।
नर सुनी सकल नरहर कहत न कुछ जन्म हरिभक्ति बिन॥८॥
जदपि कुसंग संग लाभ तदपि वह संग न किज्जिय।
जदपि धनिक होय निधन तदपि घट प्रकृति न लिज्जिय।
जदपि दान नहि शक्ति तदपि सनमान न खुट्टिय।
जदपि प्रीति उर घटै तदपि मुख उघर न टुट्टिय।
सुन सुजस दुवार किवाड़ दै कुजस जमाल न मुक्कियै।
जिय जाय जदपि भलपन करत तऊ न भलपन चुक्कियै॥९॥
तजऊं जगत बिन भवन भवन तज त्रिय बिन कीनी।
त्रिय तज जु न सुख देय सुःख तज संपति हीनी।
संपति तज बिन दान दान तज जहं न बिप्र मति।
बिप्र तजहि बिन धर्म धर्म तजियै बिन भूपति।
तज भूप भूमि बिन भूमि तज दीह दुर्ग बिन जो बसै।
तज दुर्ग सु केसवदास कवि जहां न पूरन जल लसै॥१०॥
मूढ़ तपी समकृती दुष्ट मानी गृहस्त नर।
नरनायक अति आलसी बिपुल धनवंत कृपन कर।
धरमी दुष्टसुभाव वेदपाठी अधर्म रत।
पराधीन सुखवंत भूमिपालक निर्दोष सत।

रोगी दरिद्र पीड़ित पुरुष बृद्ध नारि रस सङ्कुचित।
एते बिड़ंब संसार में इन सब कौं धिक्कार नित ॥ ११ ॥
तिय बल जोबन समय साध बल शिवपद संबर।
नृप बल तेज प्रताप दुष्ट बल बचन अडंबर।
निर्धन बल सुमिलाप दान सेवा जाचक बल।
बानिज बल ब्यौपार ज्ञान बल बर बिबेक दल।
इम विद्या बिनय उदार बल गुन समूह प्रभु बल दरब।
परवार सु बल सुबिचार कर होंहिं एक संमत सरब ॥१२॥
नरपति मंडन नीति पुरुष मंडन मन धीरज।
पंडित मंडन बिनय ताल रस मंडन नीरज।
कुलतिय मंडन लाज बचन मंडन प्रसन्न मुख।
मति मंडन कवि कर्म साध मंडन समाध सुख।
भुजबल मंडन छमा गृहपति मंडन बिपुल धन।
मंडन सिध रुचि संत कहि काया मंडन बल न घन ॥ १३ ॥
ज्ञानवंत हठ गहै निधन परिवार बढ़ावै।
बंदुआ करै गुमान धनी सेवक ह्वै धावै।
पंडित किरिया हीन राउ दुरबुद्धि प्रवानै।
बृद्ध न समझै धर्म नारि भर्त्ता रिपु मानै।
कुलवंत पुरुष कुलविधि तजै बंधु न मानै बंधु हित।
संन्यासधार धन संग्रहै ये जग में मूरख बिदित ॥ १४ ॥

गई भूमि फिर मिलै बेलि फिर जमें जरे तें।
फल फूलन तें फलैं फूल फूलंत झरे तें।
केसव विद्या निकट विकट बिसरी फिर आवै।
बऊरि होय धन धर्म गई संपति फिर पावै।
होय जो सील सुसील मति जगत हेतु द्रुम गाड़ये।
प्रान गये फिर मिलैं पै पत न गई फिर पाइये॥ १५॥
सर सर हंस न होत बाज गज राज न दर दर।
तरु तरु सुफल न होत नारि पतिब्रता न घर घर।
तन तन सुमति न होत मोति जलबूंद न घन घन।
फन फन मनि नहि होत सर्व्व मलया नहि बन बन।
कऊं रन होहिं न सूर सब नर नर होत न भक्त हर।
नरहर सुकबि कबित्त किय सर्व्व होहिं नहिं एक सर॥१६॥

॥ अथ पहेली ॥

इक नारी औ पुरुष हैं ढेर।
सब से मिलै एक ही बेर।
दिना चार का अंतर होय।
लपटै पुरुष छुड़ावै सोय॥१॥ कंघी॥
पानी में निस दिन रहै जाके हाड़ न मास।
काम करै तरवार कौ फिर पानी में बास॥२॥ कुम्हार
का डोरा॥

जल में रहै झूठ नहि भाखै बसै सु मगर मझार।
मच्छ कच्छ दादुर नहीं पंडित करो बिचार ॥ ३ ॥ घड़ी ॥
सोने की वह नारि कहावै।
दाल चांवल के मोल बिकावै ॥ ४ ॥ कंचनी ॥
स्याम बरन पर हरि नहीं जटा धरे नहि ईस।
ना जानूं पिय कौन है पंक लगाए सीस ॥ ५ ॥ कसेरू ॥
इक तरवर अरु आधो नाम ।
अर्थ करो कै छाड़ो गाम ॥ ६ ॥ नीम ॥
जलकर उपजै जल में रहै।
आंखों देखा खुसरो कहै ॥ ७ ॥ काजल ॥
सीस जटा पोथी गहै सेत बसन गल मांहिं।
जोगी जंगम है नहीं बाह्मन पंडित नांहिं ॥ ८ ॥ लहसन ॥
स्याम बरन पीतांबर कांधे मुरलीधर नहीं होय।
बिन मुरली बहु नाद करत है बिरला बूझे कोय ॥ ९ ॥
भौंरा ॥
कर बोले कर ही सुनै श्रवन सुनै नहि ताहि।
कहै पहेली बीरबल सुनिये अकबरशाहि ॥ १० ॥ नाड़ी ॥
बांबी वाकी जल भरी ऊपर जारी आग।
जबै बजाई बांसुरी निकस्यो कारो नाग ॥ ११ ॥ हुक्का ॥
जाके पात न कोंप फल पेड़हि देय जलाय।
सो तरवर बहु फलिया देखो लोगो आय ॥ १२ ॥ भोंपंपा ॥

सीस केस बिन चुटिया तीन।
औगुन लेत पराये छीन।
कोई जाय उनके दरबार।
ताके मूड न राखै बार ॥ १३ ॥ त्रिबेनी ॥
रात पड़े तब पड़ने लागी।
दिन कौं सुई रैन कौं जागी।
उसका मोती नाम बताया।
बूझो तुम मैं कूक सुनाया ॥ १४ ॥ ओस ॥
नर नारी हम एकै दीठे।
ज्यौं ज्यौं बोलैं त्यौं त्यौं मीठे।
एक न्हाय एक सेकनहारा।
कहु खुसरो नहिं कीचम गारा ॥ १५ ॥ नगारा ॥
स्याम बरन अरु सोहनी फूलनि छाई पीठ।
सब पुरुषन के गल परत ऐसी लंगर ढीठ ॥ १६ ॥ ढाल ॥
सिर पर सोहै गंगजल मुंडमाल गल माहि।
बाहन वाकौ वृषभ है शिव कहियै कै नाहि ॥ १७ ॥ रहंट ॥
रंगबरंग इक पंछी बना।
छोटी चौंच अरु काटे घना।
तीस तीस मिल बिल में बसै।
जीव नहीं अरु उड़कै डसै ॥ १८ ॥ तीर ॥

देखो एक अनोखी नारी।
गुन उसमें इक सब से भारी।
पढ़ी नहीं अरु अचरज आवै।
मरना जीना तुरत बतावै ॥ १८ ॥ नाड़ी ॥
फाट्यौ पेट दरिद्री नाम।
उत्तम घर में वाकौ ठाम।
श्री कौ अनुज विष्णु कौ प्यारौ।
पंडित होय सो अर्थ बिचारौ ॥ २० ॥ शंख ॥
नर के पेट जो नारी बसै।
पकड़ हिलाये खिलखिल हंसै।
पेट फाड़ जब नारी गिरी।
मोकौं लागी प्यारी खरी ॥ २१ ॥ गिरी ॥
बारे से वह सब को भावै।
बड़ा हुआ कुछ काम न आवै।
मैं कह दीया उसका नाम।
अर्थ करो के छोड़ो गाम ॥ २२ ॥ दीया ॥
चहुं ओर फिर आई।
जिन देखी तिन खाई ॥ २३ ॥ खाई ॥
आधी बूबू सारी रानी।
अर्थ करो कोइ पंडित ज्ञानी ॥ २४ ॥ बूरानी ॥

नारी एक शहर में सोई।
सभी वस्तु वाके घर होई।
खाय कछू नहिं पीवै पानी।
लोग कहैं यह खरी दिवानी ॥ २५ ॥ खारी बावली ॥
नारि बुलाई खरचे दाम।
तन गोरी औ अभरन स्याम।
आवत ही परदेस सिधारी।
पहुंची जहां भई अति प्यारी।
भरी गई रीती ह्वै आई।
तब वह नारी पुरुष कहाई ॥ २६ ॥ हुंडी ॥
अरबी कहा तो पाई ना।
पारसी कहा तो आई ना।
हिंदी कहत आरसी आवै।
कहो पहेली कौन बतावै ॥ २७ ॥ दर्पन ॥
आदि कटे तें सबकौं पारै।
मध्य कटे तें सबकौं मारै।
अंत कटे तें सबकौं मीठा।
सो खुसरो मैं आंखों दीठा ॥ २८ ॥ काजल ॥
पंछी एक सेत औ हरो।
निस दिन रहै बाग में परो।

ना कछु पीवै ना कछु खाय।
अश्व बराबर दौड़ा जाय ॥ २८ ॥ बकसुआ ॥
एक नारि भौंरे सी काली।
कान नहीं अरु पहरै बाली।
नाक नहीं अरु सूंघै फूल।
जेता अरज तेता ही तूल ॥ ३० ॥ ढाल ॥
एक नारि वह है बहुरंगी।
घर से बाहर निकसे नंगी।
उस नारि का यही सिंगार।
सिर पर नथनी मुंह पर बार ॥ ३१ ॥ तलवार ॥
डाल दीजे देखा कीजे ॥ ३२ ॥ चिक ॥
हाथ में लीजे देखा कीजे ॥ ३३ ॥ दर्पन ॥
एक नारि करतार बनाई।
ना वह क्वारी ना वह ब्याही।
सूहे रंग सदा ही रहै।
भाभी भाभी सब जग कहै ॥ ३४ ॥ बीरबहूटी ॥
आधा भक्षन मुख बसे आधा गुनियन साथ।
वाहि पंसारी देत है पुड़ी बांधके हाथ ॥ ३५ ॥ हरताल ॥
खेत में उपजै सब कोउ खाय।
घर में होय तौ घर बह जाय ॥ ३६ ॥ फूट ॥

लाग कहूं लागे नहीं बरजत लागे धाय।
कही पहेली एक मैं दीजो चतुर बताय ॥ ३७ ॥ होठ ॥
लछमीपति के कर बसै पांच अच्छर के मांह।
पहलौ अच्छर छाड़िकै सो दीजो तुम मांह ॥ ३८ ॥ दरसन ॥
एक अचंभा देखो चल।
सूखी लकड़ी लागे फल।
जो कोई उस फल को खाय।
पेड़ छोड़ वह अंत न जाय ॥ ३९ ॥ बरछी ॥
जोगी एक मढ़ी में सोवै।
मद पीवै औ मस्त न होवै।
जब बालका कान में लागा।
जोगी छोड़ मढ़ी को भागा ॥ ४० ॥ गोला ॥

॥ अथ मुकरी ॥

अर्द्ध निसा वह आयौ भौन।
सुंदरता बरनै कवि कौन।
निरखत ही मन भयौ अनंद।
क्यौं सखि सज्जन ना सखी चंद ॥ १ ॥
घुल गई गांठ न खोलें खूले।
जहां तहां मेरे संग डूले।

हिये बिराजत होय न भार।
क्यों सखि सज्जन ना सखी हार ॥ २ ॥
दासी है मैं मोल मगायो।
अंग अंग सब खोल दिखायो।
वासों मेरो भयो जु मेल।
क्यों सखि सज्जन ना सखी तेल ॥ ३ ॥
मैं अपनो मन दीनो ऐन।
सुंदर रूप सुहावे बैन।
ढिग तें कबऊ न करिहों जूआ।
क्यों सखि सज्जन ना सखी सूआ ॥ ४ ॥
वा बिन चित्त चहुं दिस डोलै।
चातक ज्यों पुनि पिय पिय बोलै।
प्रलै होय आवै नहि गेह।
क्यों सखि सज्जन ना सखी मेह ॥ ५ ॥
सोभा सदा बढ़ावनहारा।
आंखन तें छिन होत न न्यारा।
आठ पहर मेरो मनरंजन।
क्यों सखि सज्जन ना सखी अंजन ॥ ६ ॥
रात दिना जाको है गौन।
खुले द्वार आवै मेरे भौन।

वाको हर्ष बताऊं कौन।
क्यों सखि सज्जन ना सखी पौन॥ ७॥
बाट चलत मेरौ अंचरा गहै।
मेरी सुने न अपनी कहै।
ना कछु मोसों झगरा झांटा।
क्यों सखि सज्जन ना सखी कांटा॥ ८॥
बाट चलत मैं पड़ा ज पाया।
खोटा खरा नहीं परखाया।
हाथ लगै तब होवै कैसा।
क्यों सखि सज्जन ना सखी पैसा॥ ९॥
देखन में वह गांठगंठीला।
चाखन में वह अधिक रसीला।
मुख चूमो तो रस का भांडा।
क्यों सखि सज्जन ना सखी गांडा॥ १०॥
सिगरी रैन मो मो संग जाग्यौ।
भोर भयेतें बिछुरन लाग्यौ।
वाके बिछुरत फाटै हीया।
क्यों सखि सज्जन ना सखी दीया॥ ११॥
छठे छ मासे मो घर आवै।
आप हिलै अरु मोहि हिलावै।

नाम लेत आवे मोहि संका।
क्यों सखि सज्जन ना सखी पंखा ॥ १२ ॥
निस दिन मेरे उर पर रहै।
दोऊ कुच लै गाढ़े गहै।
उतरत चढ़त करत झकझोली।
क्यों सखि सज्जन ना सखी चोली ॥ १३ ॥
मोकों तौ हाथी कौ भावे।
घट बढ़ होय तौ नाहि सुहावे।
ढूंढढांढके ल्याई पूरा।
क्यों सखि सज्जन ना सखी चूरा ॥ १४ ॥
सिगरी रैन छाती पै राखा।
उसका रस कस मैं ने चाखा।
भार भया तब दिया उतार।
क्यों सखि सज्जन ना सखी हार ॥ १५ ॥
हरित रंग मोहि लागत नीकौ।
वा बिन सब जग लागत फीकौ।
उतरत चढ़त मरोरत अंग।
क्यों सखि सज्जन ना सखी भंग ॥ १६ ॥
लंबी लंबी डगों जु आवे।
सारे दिन की हौंस बुझावे।

उठकै चला तो पकड़ा खूंट ।
क्यौं सखि सज्जन ना सखी ऊंट ॥ १७ ॥

दुर दुर करूं तौ दौड़ा आवै ।
खन आंगन खन बाहर जावै ।
देहल छोड़ कहूं नहिं सुत्ता ।
क्यौं सखि सज्जन ना सखी कुत्ता ॥ १८ ॥

छोटा मोटा अधिक सुहाना ।
जो देखे सो होय दिवाना ।
कबहूं बाहर कबहूं अंदर ।
क्यौं सखि सज्जन ना सखि बंदर ॥ १९ ॥

अति सुरंग है रंग रंगीलो ।
है गुनवंत बहुत चटकीलो ।
रामभजन बिन कभी न सोता ।
क्यौं सखि सज्जन ना सखी तोता ॥ २० ॥

आठ पहर मेरे ढिग रहै ।
मीठी प्यारी बातें कहै ।
स्याम बरन अरु राते नैना ।
क्यौं सखि सज्जन ना सखी मैना ॥ २१ ॥

जब आवै तब अस भर लावै ।
तन मन की सब तपत बुझावै ।

मन का भारी तन का छोटा।
क्यों सखि सज्जन ना सखि लोटा॥ २२॥
धमक चढ़े सुध बुध बिसरावै।
दाबत जांघ बहुत सुख पावै।
अति बलवंत दिननि कौ घोरा।
क्यों सखि सज्जन ना सखी घोरा॥ २३॥
अति सुंदर जग चाहत जाकौं।
मैं भी देख लुभानी वाकौं।
देखत रूप भयौ जो टोना।
क्यों सखि सज्जन ना सखी सोना॥ २४॥
निस दिन आंगन ऊभौ रहै।
छांह धूप सब ऊपर सहै।
वाके देखे लगै न भूख।
क्यों सखि सज्जन ना सखी रूख॥ २५॥

॥ अथ हियहुलास ॥

॥ दोहा ॥

प्रथमें ताकौ सुमिरियै जिन दीनौं गुर ज्ञान।
ज्ञानी गुन गावै सदा ध्यानी धरै जु ध्यान॥ १॥
अंबर थांभ्यौ थंभ बिन धरती अधर धराव।
मनुषरूप ह्वै अवतरौ देखत कवि कौ भाव॥ २॥

वा बन तीनौ लोक में नाहीं दूजो कोय।
मन में निश्चै जानियै होनी होय सु होय॥ ३॥
अब कछु बरनौ रीति रस रस ही जग कौ जीय।
रसना रस कौ जस कहै सुनि सुख पावै हीय॥ ४॥
हियऊलास या ग्रंथ कौ राख्यौ नाम बिचार।
यामें सिगरे राग के रचे रूप श्रृंगार॥ ५॥
आद नाद अनहद भयौ तातें उपज्यौ वेद।
पुनि पायौ वा वेद में सकल सृष्टि कौ भेद॥ ६॥
प्रान पर्यौ षट राग सुनि तब उपज्यौ बैराग।
बारे तरुने बृद्ध कौं तातें भावत राग॥ ७॥
जग कौ धीरज राग है राग रूप की खान।
तनमंजन सो राग है राग प्रेम के प्रान॥ ८॥
सुख कौ दाता राग है राग रूप कौ भोग।
याही तें सब कहत हैं राग रंग संयोग॥ ९॥
राग हरै सब रोग कौं राग चहै रसभोग।
बिरही झुरै जु राग कौं उपजै महा बियोग॥ १०॥

॥ अथ राग रागिनी नाम॥

भैरौं की धन भैरवी बंगाली बैरारि।
मधुमाध्वी अरु सिंधुवी पांचौं बिरहन नारि॥ ११॥
टोड़ी गौरी गुनकली खंबावति कोकब्ब।
मालकौस की रागिनी गावत अति दुर्लब्ब॥ १२॥

रामकली पटमंजरी और कहीं देसाख।
ये नारी हिंडोल की ललित बिलावल राख ॥ १३ ॥
देसी नट अरु कान्हरा केदारा कामोद।
दीपक की प्यारी सबै महा प्रेम परमोद ॥ १४ ॥
धनासिरी आसावरी मारू बऊरि बसंत।
सिरीराग की रागिनी मालसिरी है अंत ॥ १५ ॥
भूपाली अरु गूजरी देसीकार मलारि।
तनक बियोगिनि कामिनी मेघराग की नारि ॥ १६ ॥

॥ अथ रागगुन बर्नन ॥

भैरौं सुर सुरता कहैं कोल्हू चलै जु धाय।
मालकौस तब जानियै पाहन पघल बहाय ॥ १७ ॥
चलै हिंडोलौ आप तें सुनत राग हिंडोल।
बरषै जब घनधार अति मेघराग के बोल ॥ १८ ॥
सिरीराग के सुर सुनै सूखो बृच्छ हराय।
दीपक दीपक बरि उठै जो कोऊ जानै गाय ॥ १९ ॥

॥ अथ राग आलाप समय ॥

पिछले पहरै निस समैं भैरौंराग बखान।
मालकौस तब गाइयै जबलौं निकसै भान ॥ २० ॥
एक पहर दिन चढ़े तक कह्यौ राग हिंडोल।
ठीक दुपहरी के समय दीपक के सुर बोल ॥ २१ ॥

सिरीराग चौथे पहर जबलौं दिन अंथियाय।
मेघराग जब ही भलो जबै मेघ बरषाय ॥ २२ ॥
फागन में ये राग सब आगत आठौं जाम।
अष्ट जाम में निस समें एक जाम बिश्राम ॥ २३ ॥

॥ अथ राग की ऋतु बर्नन ॥

भैरौं सरद कौसिक सिसिर और हिंडोल बसंत।
दीपक ग्रीषम हेमश्री मेघ सु पावस अंत ॥ २४ ॥

॥ अथ बाजे बर्नन ॥

जग मं सब सुरता कहैं बाजे साढ़े तीन।
खाल तार अरु फूंक पुनि अर्धताल सुरहीन ॥ २५ ॥
खाल नगारौ ढोल डफ और पखावज जान।
तार तंबूरा बीन है बङ्करि रबाब बखान ॥ २६ ॥
फूंक नफीरी बांसुरी सरनाई करनाय।
ताल खंजरी झांझ सब बाजे दिये बताय ॥ २७ ॥

॥ अथ गान आसन ॥

बैठे आसन ऊंट की तब हो शुद्ध अलाप।
चलते लेटे सुर भरै मानो महा कलाप ॥ २८ ॥

॥ अथ भैरौं स्वरूप बर्नन ॥

भैरौं शिवछवि सिर जटा सेतबसन तिरनैन।
मुंडन की माला धरै सिद्ध रूप सुखदैन ॥ २९ ॥

॥ सवैया ॥

शिवमूरति भैरों कौ भाव बन्यौ तिरनेतर मुंड की माल गरै।
पट सत सबै तन में पहिरै हृदयै भगवान कौ ध्यान धरै।
तिरसूल विराजत है कर में सब भामिनि कौ मन लेत हरै।
तन छार लगे दुति दूनि भई चित चाहनि में जिय जात छरै॥२०॥

॥ अथ रागिनी स्वरूप ॥

॥ दोहा ॥

शिव पूजत कैलाश पर दोऊ कर में ताल।
सेत चीर अंगिया अरुन रूप भैरवी बाल ॥२१॥
भस्मपिटारी कर गहे हाथ लिये तिरशूल।
बंगाली व्याकुल भई गई सबै सुधि भूल ॥ २२ ॥
कानन फूल दुपहरिया कर कंकन शृंगार।
सीस केस सोहत छुटे सेतबसन बैरार ॥ २३ ॥
कंचन तन लोचन कमल नागरि महा अनूप।
पिय पै बैठी हंसति है मधुमाध्वी इह रूप ॥ २४ ॥
पुहप कदम कानन धरै पहरै बस्तर लाल।
क्रोधवंत तिरशूल कर लिये सिंधुवी बाल ॥ २५ ॥

॥ अथ मालकौस स्वरूप बर्नन ॥

मालकौस लीलेबसन सेत छरी है हाथ।
मोतिन की माला गरे सिगरी सखियां साथ ॥ २६ ॥

॥ सवैया ॥

कौसिक की उपमा है भली तन गोरे बिराजत है पट लीलौ।
माल गरै कर सेत छरी रस प्रेम छक्यौ जिय छैलछबीलौ।
नागरि रूप उजागरि लै संग डोलत है सुख सों गरबीलौ।
कामिनि कौ मन मोहत है मनभावन रूप अनंग रसीलौ॥३७॥

॥ अथ रागिनी स्वरूप ॥

॥ दोहा ॥

टोड़ी कर बीना गहै गावति पिय के हेत।
चंचल छबि मृगलोचनी पहरै बस्तर सेत॥ ३८॥
गौरी छबि अति सांवरी अंब कोंप धरे कान।
तिरषा तन तप काम की गावत मीठी तान॥ ३९॥
कुटे केस तन गुनकली बैठी पिय के पास।
नीची ग्रीवा करि रही अति ही चित्त उदास॥ ४०॥
खंबावति गोरे बदन गावति कोकिल बैन।
अति आतुर चातुर खरी कामवंत दिन रैन॥ ४१॥
कोकब कामिनि निस समें जागी पिय के संग।
रति माने कै छीन तन अंग अंग में रंग॥ ४२॥

॥ अथ हिंडोल स्वरूप बर्नन ॥

॥ दोहा ॥

पीत बसन हिंडोल के है जु हिंडोरें माहिं।
सखी झुलावति चाव सों गाय गाय मुसकाहिं॥ ४३॥

॥ सवैया ॥

कीन्ह बनाव महा छवि सुंदर भावत बैठौ हिंडोलहिं डोलै।
झोंक झुलावत और दुऊं सब गावति हैं सखियां मुख खोलै।
गोरो सो गात दिपात खरो मानो दामिनि सी दुति देखति
सोलै।
बस्तर पीत लिये रस रीति अनंग सो सोहै हंसे मृदु बोलै॥४४॥

॥ अथ रागिनी स्वरूप ॥

॥ दोहा ॥

रामकली नीले बसन कंचन सी सब देह।
पिकबानी गावति खड़ी पिय के प्रेम सनेह॥ ४५ ॥
बिरह भरी पटमंजरी मन मलीन तन छीन।
सखी सीख अति देति है भई प्रेम आधीन॥ ४६ ॥
पिय के कर पर कर धरे अति व्याप्यौ तन काम।
तन दुरबल देसाख है महा बिरहनी बाम॥ ४७ ॥
ललित गरे माला पुहप सुंदर तरुनी जान।
गोरी छवि बस्तर अरुन नयन काम के बान॥ ४८ ॥
कामदेव को ध्यान धरि गावत गीत संगीत।
करति सृंगार बिलावली लै लै बस्तर पीत॥ ४९ ॥

॥ अथ दीपकराग स्वरूप वर्नन ॥

॥ दोहा ॥

दीपक गज की पीठ पर बैठ्यौ बागौ लाल।
मुक्तमाल सोभित गरै चहुं दिस सिगरी बाल ॥ ५० ॥

॥ सवैया ॥

दीपक कौ परताप बड़ौ चढ़ि बैठ्यौ गयंद की पीठ बिराजै।
अंबर राते शरीर सबै मुकुतान की माल गरै छवि छाजै।
संग सखी सब सोहति हैं तिन माहिं जो आप गयंद सौ गाजै।
सांवरौ रूप सरूप बन्यौ दुति देखत दुःख सबै तन भाजै ॥ ५१ ॥

॥ अथ रागिनी स्वरूप ॥

॥ दोहा ॥

देसी अति बस्तर हरे काम सताई नारि।
पति कौं टेल जगावती मिसकै बारंबारि ॥ ५२ ॥
अरुन बरन सिगरे बसन नटवासी नटनारि।
दोऊ कांधे कर धरे पिय तन रही निहारि ॥ ५३ ॥
सीस पत्र गजदंत कौ कर बांकी तरवारि।
मोरकंठ के बरन है रूप कान्हरौ नारि ॥ ५४ ॥
सीस जटा सब तन लटा गरै जनेऊ नाग।
केदारौ इह रूप है धरै ध्यान बैराग ॥ ५५ ॥
कामवंत कामोद है पीतबसन तन तास।
अंब तरै बैठी हंसति बिहरी पिय कौ पास ॥ ५६ ॥

॥ अथ श्रीराग स्वरूप बर्नन ॥

सिरीराग के कर कमल भूप रूप पट लाल ।
बरष अठारह कौ मरन गावत कंठ रसाल ॥ ५७ ॥

॥ सवैया ॥

बर्ष अठारह कौ बरन्यौ मुख देखत ही सब के मन भावै ।
बाम सबै बसके अपनी गुन गायकै भाव ते भेद बतावै ।
रातौ जो बागौ बिराजत है कर बारिज फूल लिये मुसकावै ।
भूप के रूप सरूप बन्यौ सब ही में भलौ सिरीराग कहावै ॥ ५८ ॥

॥ अथ रागिनी स्वरूप ॥

॥ दोहा ॥

धनासिरी बिरहनि बड़ी हृदये बिरह अपार ।
सब तन पियरौ ह्वै रह्यौ निपट छीन तन बार ॥ ५९ ॥
चंदन टीकौ भाल पर गरै नाग कौ हार ।
छबि अति सुंदरि सांवरी आसावरी कुमार ॥ ६० ॥
मारू के माला गरै पिये प्रेम मदमात ।
तरुनी सुंदर सांवरी बैठी अति अलसात ॥ ६१ ॥
मोरपच्छ सिर पर धरै बस्तर पीत बसंत ।
कान फूल जो अंब कौ चहुं दिस भंवर भ्रमंत ॥ ६२ ॥
मालसिरी दुरबल बदन सखी हाथ पर हाथ ।
चहुं ओर पति कौं तकति चहै मदन कौ साथ ॥ ६३ ॥

॥ अथ मेघराग स्वरूप वर्णन ॥

॥ दोहा ॥

स्यामबसन जो मेघ है गहै हाथ तरवार।
अति आतुर म्रातुर खरौ गावत सुरत विचार ॥ ६४ ॥

॥ सवैया ॥

मेघ मलार महा अति सुंदर इंदर की छवि आप बन्यौ है।
पहरे पट स्याम गहै तरवार जौ मास गर इहिं भांति ठन्यौ है।
जैसो जहां चहिये जोई अंग सो तैसी ये भांति में आप घन्यौ है।
काम कौ आतुर है अति ही तिय की रति कौ चितचाव बन्यौ है ॥ ६५ ॥

॥ अथ रागिनी स्वरूप ॥

॥ दोहा ॥

भूपाली बिरहन खरी केसर बोरे चीर।
भयौ बिरह की ज्वाल तें पीरौ सबै सरीर ॥ ६६ ॥
बिरहजरा तन गूजरी रोवत छूटे केस।
कामदेव कानन लगे तिनहि दियौ उपदेस ॥ ६७ ॥
देसकार कंचनबरन खेलत पिय के संग।
छियऊलास है काम का चढ़ौ जो जोबन अंग ॥ ६८ ॥

बीन गहे गावत मऊत रोवति है जल ढार।
तन दुरबल बिरहा दहै बिरहनि नारि मलार ॥ ६८ ॥
सेज बिछाई कमलदल लेटि रही मन मारि।
लेति उसास उसीयरी तनक बियोगनि नारि ॥ ७० ॥

॥ इति सभाविलास समाप्तः ॥